12 सूरए यूसुफ़

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 1

आयत का अनुवाद: "मैं उस ख़ुदा के नाम से (शुरु करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में ख़ुदा के नाम से शुरुआत की जाती है, जिसमें उसकी मेहरबानी और रहम का उल्लेख किया गया है।
- **हेतु (Reasoning):** इस आयत में सत्य और प्रमाण का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं दिया गया है कि इस "मेहरबानी" और "रहम" को कैसे प्रमाणित किया जा सकता है। महज शब्दों से कोई सिद्धांत नहीं बनाया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में परमात्मा के गुणों का विश्लेषण किया गया है, लेकिन वह गुण तर्कसंगत रूप से या अन्य प्रमाणों से सिद्ध होते हैं, केवल नाम से नहीं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्क और प्रमाण के सिद्धांत के संदर्भ में कोई ठोस जानकारी प्रदान नहीं करती, बल्कि केवल भावनात्मक विश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"हमने इस किताब (कुरान) को अरबी में नाज़िल किया है ताकि तुम समझो।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि कुरान को अरबी में नाज़िल किया गया है ताकि लोग समझ सकें।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा कि सिर्फ अरबी भाषा में नाज़िल करने से समझ में आसानी होगी, तार्किक रूप से सही नहीं है। भाषा का चुनाव समझ का एकमात्र साधन नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): संस्कृत, जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों की भाषा है, को आज भी पूरी दुनिया में समझा जा सकता है यदि व्यक्ति उसका अध्ययन करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह दावा कि सिर्फ अरबी भाषा में नाज़िल करने से ही समझने में आसानी होगी, ज्ञान के प्रसार के संदर्भ में अपूर्ण है।**

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) हम तुम पर ये कुरान नाज़िल करके तुम से एक निहायत उम्दा क़िस्सा बयान करते हैं अगरचे तुम इसके पहले (उससे) बिल्कुल बेख़बर थे।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि कुरान में एक उम्दा क़िस्सा बयान किया गया है, जिसे पहले रसूल नहीं जानते थे।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क कि पहले रसूल को यह जानकारी नहीं थी, लेकिन अब कुरान के जरिए दी जा रही है, एक निश्चित ज्ञान का दावा है, लेकिन यह ज्ञान कहीं से प्रमाणित नहीं होता।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में विभिन्न काव्यग्रंथों के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति का उल्लेख है, जो पहले से ज्ञात नहीं था, लेकिन यह एक विचारशील प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त हुआ।**
- **निगमन (Conclusion): यह दावा बिना किसी प्रमाण के किया गया है कि रसूल को पहले यह क़िस्सा नहीं पता था।**

आयत 4

आयत का अनुवाद:
"(वह वक़्त याद करो) जब यूसूफ ने अपने बाप से कहा ऐ अब्बा मैने ग्यारह सितारों और सूरज चाँद को

(ख़्वाब में) देखा है मैने देखा है कि ये सब मुझे सजदा कर रहे हैं।"
चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसूफ ने अपने पिता से कहा कि उसने ख़्वाब में देखा है कि ग्यारह सितारे और सूरज चाँद उसे सजदा कर रहे हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ एक ख़्वाब का संदर्भ दिया गया है, जो एक प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार्य दृष्टिकोण है, लेकिन इसे सत्य के रूप में प्रस्तुत करने का कोई तर्क नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में भी स्वप्नों का महत्व है, लेकिन वह केवल एक संकेत होते हैं, जिनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल प्रतीकात्मक दृष्टि को सत्य के रूप में प्रस्तुत करती है, जो तर्क के दृष्टिकोण से ग़लत हो सकता है।**

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"याक़ूब ने कहा ऐ बेटा (देखो ख़बरदार) कहीं अपना ख़्वाब अपने भाईयों से न दोहराना (वरना) वह लोग तुम्हारे लिए मक्कारी की तदबीर करने लगेगें इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुष्मन है।"
चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब ने अपने बेटे को सलाह दी कि वह अपने भाईयों से ख़्वाब न साझा करे, क्योंकि शैतान के कारण वे उसे नुकसान पहुँचा सकते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ शैतान के रूप में एक मानसिक और भावनात्मक डर प्रस्तुत किया गया है, जिसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): मनुष्य को अपने आंतरिक भय से पार पाने की सलाह दी जाती है, और किसी बाहरी शक्ति से डरने का कोई तर्क नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में केवल डर और मानसिक स्थिति का उल्लेख किया गया है, जिसका कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	मेहरबानी और रहम को बिना प्रमाण के प्रस्तुत करना।
2	प्रमाण	अरबी भाषा में क़ुरान के नाज़िल होने को समझने के एकमात्र उपाय के रूप में प्रस्तुत करना।
3	प्रमाण	बिना प्रमाण के ज्ञान के प्रसार का दावा।
4	उपमान	प्रतीकात्मक ख़्वाब को सत्य के रूप में प्रस्तुत करना।
5	हेतु	शैतान के भय को तर्कहीन रूप में प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के अभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। घटनाओं और विचारों को प्रतीकात्मक या डर के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, जिनका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"और (जो तुमने देखा है) ऐसा ही होगा कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें बरगुज़ीदा (इज़्ज़तदार) करेगा और तुम्हें ख़्वाबो की ताबीर सिखाएगा और जिस तरह इससे पहले तुम्हारे दादा परदादा इबराहीम और इसहाक़ पर अपनी नेअमत पूरी कर चुका है और इसी तरह तुम पर और याक़ूब की औलाद पर अपनी नेअमत पूरी करेगा बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ा वाक़िफकार हकीम है।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दावा करती है कि ख़ुदा यूसूफ और उनके परिवार पर अपनी नेअमत (कृपा) पूरी करेगा, जैसे पहले इब्राहीम और इसहाक़ पर की थी।
- **हेतु (Reasoning):** इस आयत में कोई तर्क या कारण नहीं दिया गया है कि क्यों और कैसे ख़ुदा की कृपा विशेष रूप से यूसूफ और उनके परिवार पर पूर्ण होगी। यह केवल एक काव्यात्मक दावा है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक परंपरा में भी कृपा का विषय आता है, लेकिन उसमें कर्म और पुण्य का स्पष्ट संबंध होता है, जो यहाँ नहीं दिखाया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी प्रमाण के भविष्यवाणी करती है और कृपा का सामान्य दावा करती है, जो तर्कसंगत रूप से स्पष्ट नहीं है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) यूसुफ और उनके भाइयों के किस्से में पूछने वाले (यहूद) के लिए (तुम्हारी नुबूवत) की यक़ीनन बहुत सी निशनियाँ हैं।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि यूसूफ और उनके भाइयों के किस्से में यहूदियों के लिए नुबूवत (प्रोफेthood) के स्पष्ट संकेत हैं।
- **हेतु (Reasoning):** यह दावा बिना किसी ठोस प्रमाण के किया गया है कि यूसूफ के किस्से में नुबूवत के संकेत हैं। यह तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी महान संतों और अवतारों के बारे में कथाएँ हैं, लेकिन उन्हें नुबूवत के रूप में पेश करना तर्कसंगत नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत नुबूवत को सिद्ध करने के लिए कोई ठोस प्रमाण या तार्किक आधार नहीं देती है।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"कि जब (यूसूफ के भाइयों ने) कहा कि बावजूद कि हमारी बड़ी जमाअत है फिर भी यूसूफ और उसका

हकीक़ी भाई (इब्ने यामीन) हमारे वालिद के नज़दीक बहुत ज़्यादा प्यारे हैं इसमें कुछ शक नहीं कि हमारे वालिद यक़ीनन सरीही (खुली हुयी) ग़लती में पड़े हैं।"

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 11 आयत का अनुवाद:
"सब ने (याक़ूब से) कहा, 'अब्बा जान आख़िर उसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे में हमारा ऐतबार नहीं करते, हालांकि हम लोग तो उसके ख़ैर ख़्वाह (भला चाहने वाले) हैं।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि याक़ूब को यूसुफ के बारे में संदेह नहीं करना चाहिए क्योंकि अन्य लोग उसकी भलाई के इच्छुक हैं।**
- **हेतु (Reasoning): इस तर्क का कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। केवल दूसरों का दावा करना कि वे भला चाहने वाले हैं, विश्वास के लिए पर्याप्त नहीं होता।**
- **उदाहरण (Example): यदि कोई व्यक्ति हमें भला चाहने का दावा करता है, तो हम यह केवल उनके शब्दों पर नहीं विश्वास करते। हमें वास्तविक प्रमाण और कार्रवाई की आवश्यकता होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अंधविश्वास को बढ़ावा देती है, क्योंकि इसमें किसी भी प्रमाण या तर्कसंगत दलील की कमी है।**

आयत 12 आयत का अनुवाद:
"हालांकि हम लोग तो उसके ख़ैर ख़्वाह (भला चाहने वाले) हैं आप उसको कुल हमारे साथ भेज दीजिए कि ज़रा (जंगल) से फल वग़ैरह् खाए और खेले कूदे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि यूसुफ को जंगल में खेलने और फल खाने भेजने के लिए कोई जोखिम नहीं है।**
- **हेतु (Reasoning): इसमें यह बात स्थापित करने की कोशिश की जा रही है कि यूसुफ को सुरक्षित रखने के लिए कोई खतरा नहीं है, जबकि इतिहास में देखा जाता है कि यही लोग उसे धोखे से कुएं में फेंक देते हैं।**

- **उदाहरण (Example): किसी भी सुरक्षा योजना के लिए वास्तविकता और सत्यापन आवश्यक होता है, न कि केवल बयान देने से किसी घटना की सुरक्षित होने की गारंटी मिलती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत यथार्थ और प्रमाण की कमी के कारण भ्रम पैदा करती है और सही निर्णय लेने के लिए आवश्यक तर्क को नजरअंदाज करती है।**

आयत 13 आयत का अनुवाद:
"और याक़ूब ने कहा, 'तुम्हारा उसको ले जाना मुझे सख़्त सदमा पहुँचाना है और मैं तो इससे डरता हूँ कि तुम सब के सब उससे बेख़बर हो जाओ और (मुबादा) उसे भेड़िया फाड़ खाए।'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमेय (Object of Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब ने यह दावा किया कि यदि वह यूसुफ को भेजेंगे, तो उसे भेड़िया खा सकता है।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क यथार्थ से मेल नहीं खाता, क्योंकि याक़ूब के पास कोई वास्तविक प्रमाण या घटना का अनुभव नहीं था, जो इस भय को प्रमाणित करता।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, भय और असुरक्षा के कारण निर्णय लेना गलत है, जब तक कि उसे वास्तविक प्रमाणों से समर्थन न मिले।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अनुचित भय और अव्यवस्थित तर्क को बढ़ावा देती है, जो वास्तविक घटनाओं पर आधारित नहीं है।**

आयत 14 आयत का अनुवाद:
"वह लोग कहने लगे, 'जब हमारी बड़ी जमाअत है (इस पर भी) अगर उसको भेड़िया खा जाए तो हम लोग यकीनन बड़े घाटा उठाने वाले (निकलते) ठहरेगें।'"

चुना गया न्याय तत्व: **हेतु (Reason)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि यदि यूसुफ को भेड़िया खा जाए, तो वे सब शर्मिंदा होंगे।**

- **हेतु (Reasoning): यह तर्क कमजोर है, क्योंकि वे पहले से ही यूसुफ को धोखा देने की योजना बना रहे थे, फिर वे इस प्रकार की सुरक्षा का दावा कैसे कर सकते हैं।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में कहा गया है कि एक व्यक्ति अपनी सुरक्षा का दावा तभी कर सकता है, जब उसके पास सच्चे प्रमाण हों, न कि केवल शेखी बघारने से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत मानसिक असमंजस और भ्रम को बढ़ावा देती है, जो निर्णय लेने में दुराव और झूठी स्थितियाँ उत्पन्न करती है।**

आयत 15 आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ यूसुफ को जब ये लोग ले गए और इस पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया कि उसको अंधे कुएं में डाल दें और (आख़िर ये लोग गुज़रे तो) हमने यूसुफ़ के पास 'वही' भेजी कि तुम घबराओ नहीं हम अनक़रीब तुम्हें मरतबे (उँचे मकाम) पर पहुँचाएगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कह रही है कि यूसुफ को कुएं में डालने के बाद ईश्वर ने उसे आश्वासन दिया कि वह जल्द ही ऊंचे स्थान पर पहुंचेगा।**
- **हेतु (Reasoning): इसका कोई तार्किक आधार नहीं है कि किसी को जानबूझकर संकट में डालने के बाद केवल भविष्य के वादों से उसे मानसिक रूप से सहारा दिया जाए।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति को उसके संकट में छोड़ना और बाद में उसे राहत का वादा करना, न्याय और मानवता के सिद्धांतों के खिलाफ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय और दया के सिद्धांतों का उल्लंघन करती है, और इससे मानवीय आधार पर गलत संदेश मिलता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
11	प्रमाण	तर्कसंगत आधार की कमी, केवल दावा।

12	**प्रमाण**	**दावा का सत्यापन या प्रमाण नहीं।**
13	**प्रमेय**	**भय के आधार पर निर्णय लेना गलत।**
14	**हेतु**	**सुरक्षा के झूठे दावे, कोई प्रमाण नहीं।**
15	**प्रमेय**	**अंधविश्वास और गलत संदेश का प्रचार।**

निष्कर्ष

इन आयतों में यथार्थ और प्रमाण की कमी दिखाई देती है। घटनाओं को तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत करने के बजाय अंधविश्वास, डर और अव्यावहारिक सोच को बढ़ावा दिया गया है। न्याय दर्शन और मानवता के सिद्धांतों के अनुसार, ये विचार और संदेश मानवता के लिए अनुपयुक्त हैं।

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसूफ के भाइयों का कहना है कि उनके पिता याक़ूब अपनी ग़लती में पड़े हैं, क्योंकि वह यूसूफ और उसके भाई को ज्यादा प्यार करते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क कि एक पिता का अपने बच्चों के प्रति प्यार ग़लती है, किसी तर्कसंगत आधार पर आधारित नहीं है। प्रेम और स्नेह किसी के व्यक्तिगत अधिकार होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय परिवारों में भी कई बार पिता अपने किसी एक बच्चे को विशेष स्नेह देते हैं, लेकिन इसे ग़लती के रूप में नहीं देखा जाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क कि पिता का प्यार ग़लती है, न केवल भावनात्मक रूप से गलत है, बल्कि इसे तर्कसंगत रूप से भी सही नहीं ठहराया जा सकता।**

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"(ख़ैर तो अब मुनासिब ये है कि या तो) युसूफ को मार डालो या (कम से कम) उसको किसी जगह (चल कर) फेंक आओ तो अलबत्ता तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाएगा और उसके बाद तुम सबके सब (बाप की तवजज्जो से) भले आदमी हो जाओगें।"
चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसूफ के भाइयों का विचार है कि अगर वे यूसूफ को मार दें या किसी जगह छोड़ आएं तो उनके पिता का ध्यान केवल उन्हीं पर होगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार कि किसी की हत्या या अपहरण से प्रेम और ध्यान प्राप्त किया जा सकता है, तर्कसंगत और नैतिक दृष्टिकोण से गलत है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय संस्कृति में भी भाइयों के बीच प्रेम की शिक्षा दी जाती है, न कि उनके बीच हिंसा या घृणा को बढ़ावा देने की।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत हिंसा और असहमति को बढ़ावा देती है, जो तर्क और नैतिकता के विपरीत है।**

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसूफ को जान से तो न मारो हाँ अगर तुमको ऐसा ही करना है तो उसको किसी अन्धे कुएँ में (ले जाकर) डाल दो कोई राहगीर उसे निकालकर ले जाएगा (और तुम्हारा मतलब हासिल हो जाएगा)।"
चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसूफ को मारने के बजाय किसी अंधे कुएँ में डालने का सुझाव दिया गया है।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क कि किसी को खतरनाक स्थिति में डालकर उसके भाग्य पर निर्भर किया जा सकता है, एक अव्यवहारिक और अमानवीय दृष्टिकोण है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ता है, लेकिन दूसरों को नष्ट करने के बजाय मार्गदर्शन और शिक्षा दी जाती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत रूप से और नैतिक दृष्टिकोण से अव्यवहारिक और अनैतिक है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय	बिना प्रमाण के कृपा और नेअमत का दावा।
7	प्रमाण	नुबूवत के प्रमाण के रूप में कथाएँ प्रस्तुत करना।
8	हेतु	पिता के प्रेम को ग़लती के रूप में पेश करना।
9	हेतु	हिंसा और अपहरण को समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करना।
10	हेतु	अव्यवहारिक और अनैतिक सुझाव देना।

निष्कर्ष

इन आयतों में न केवल तर्क की कमी है, बल्कि नैतिक और मानवता के सिद्धांतों का उल्लंघन भी दिखता है। इनमें हिंआयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 16
आयत का अनुवाद:
"फिर वे लोग रात को अपने बाप के पास (बनवट) से रोते पीटते हुए आए और कहने लगे, 'ऐ अब्बा! हम लोग तो जाकर दौड़ने लगे और यूसुफ को अपने असबाब के पास छोड़ दिया, इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया। हम लोग अगर सच्चे भी हो, मगर आपको तो हमारी बात का यक़ीन आने का नहीं।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने यह दावा किया कि भेड़िया यूसुफ को खा गया और वे दौड़ते हुए बाप के पास आए।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा पूरी तरह से अविश्वसनीय है, क्योंकि अगर यूसुफ सचमुच भेड़िया द्वारा खाया गया होता, तो उसका कुर्ता सही सलामत नहीं बचता।**
- **उदाहरण (Example): वास्तविक घटनाओं में, यदि कोई जानवर किसी व्यक्ति को खाता है, तो उसकी स्थिति और कपड़े भी खराब हो जाते हैं, लेकिन यहां यह दावा किया गया कि यूसुफ का कुर्ता ठीक था।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल अविश्वसनीय कथन पर आधारित है, और इसके द्वारा यथार्थ और प्रमाण की अवहेलना की गई है।**

आयत 17

आयत का अनुवाद:

"और ये लोग यूसुफ के कुरते पर झूठ मूठ (भेड़) का खून भी (लगा के) लाए थे, याक़ूब ने कहा, 'भेड़िया ने ही खाया, (बल्कि) तुम्हारे दिल ने तुम्हारे बचाओ के लिए एक बात गढ़ी। वरना कुर्ता फटा हुआ ज़रुर होता। फिर सब्र व शुक्र है और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर ख़ुदा ही से मदद माँगी जाती है।'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमाण (Valid Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने यूसुफ के कुर्ते पर खून लगा कर यह झूठा दावा किया कि भेड़िया ने उसे खा लिया।**
- **हेतु (Reasoning): याक़ूब का तर्क सही है–यदि भेड़िया ने यूसुफ को खा लिया होता, तो उसका कुर्ता सही सलामत नहीं बचता। खून लगाना एक झूठा प्रमाण प्रस्तुत करने का प्रयास है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, वास्तविक प्रमाणों और तथ्यों के बिना कोई दावा स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह अविश्वसनीय और मिथ्या है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत झूठे प्रमाणों और दावों पर आधारित है, और न्याय दर्शन में इसे अनुचित और अविश्वसनीय माना जाएगा।**

आयत 18

आयत का अनुवाद:

"और (ख़ुदा की शान देखो) एक काफ़ला (वहाँ) आकर उतरा, उन लोगों ने अपने सक़्क़े (पानी भरने वाले) को (पानी भरने) भेजा। ग़रज़ उसने अपना डोल डाला ही था (कि यूसुफ उसमें बैठे और उसने ख़ीचा तो निकल आए)। वह पुकारा, 'आहा! ये तो लड़का है,' और काफ़ला वालो ने यूसुफ को क़ीमती सरमाया समझकर छिपा रखा, हालांकि जो कुछ ये लोग करते थे ख़ुदा उससे ख़ूब वाकिफ था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ एक काफ़ला के पानी भरने वाले से मिला और उसे क़ीमती समझ कर छिपा लिया गया।**
- **हेतु (Reasoning): यह घटनाक्रम रहस्यमय और अनायास लगता है। यदि यह घटनाएं वास्तव में घटित होतीं, तो इन पर तर्कसंगत और व्यावहारिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का वास्तविक कारण और प्रक्रिया समझने के लिए स्पष्ट और तार्किक स्पष्टीकरण आवश्यक है। इस घटनाक्रम में वास्तविकता का अभाव है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाणिक और व्यावहारिक नहीं है, और तर्कसंगत सोच के विपरीत है।**

आयत 19

आयत का अनुवाद:

"(जब यूसुफ के भाइयों को ख़बर लगी तो आ पहुँचे और उनको अपना ग़ुलाम बताया और उन लोगों ने यूसुफ को गिनती के खोटे चन्द दरहम (बहुत थोड़े दाम पर बेच डाला) और वह लोग तो यूसुफ से बेज़ार हो ही रहे थे।)"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को कम दाम पर बेच दिया गया और उसके भाई उससे नफरत करते थे।**

- **हेतु (Reasoning): यह घटना और इसका तर्क यह दर्शाता है कि भाई यूसुफ के साथ सच्चे नहीं थे, क्योंकि उन्होंने उसे कम मूल्य पर बेचा।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी वस्तु का उचित मूल्य उसके गुण और महत्व के आधार पर होना चाहिए, लेकिन यहाँ यह कमीशन और व्यापारिक दृष्टिकोण से अन्यायपूर्ण है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तात्त्विक और न्यायिक दृष्टिकोण से अपमानजनक है, क्योंकि यहाँ अनुचित व्यापार और अविश्वास दिखाया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
16	प्रमाण	दावा अविश्वसनीय, कोई ठोस प्रमाण नहीं।
17	प्रमाण	झूठे प्रमाण और आधारहीन दावा।
18	प्रमेय	घटना का प्रमाणिक और व्यावहारिक आधार नहीं है।
19	व्याप्ति	तात्त्विक और न्यायिक दृष्टिकोण से अनुचित व्यवहार।

निष्कर्ष

इन आयतों में प्रस्तुत घटनाएँ अविश्वसनीय और तर्कसंगत नहीं हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन्हें मान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि ये घटनाएँ वास्तविक प्रमाण और तर्क की कमी से ग्रस्त हैं। ये आयतें केवल भ्रम और झूठे दावों को बढ़ावा देती हैं, जो मानवता और न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।

सा, शोषण, और गलत विचारधाराओं को बढ़ावा दिया गया है, जो कि तर्कसंगत रूप से स्वीकार्य नहीं हैं।

आयत 20 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 20

आयत का अनुवाद:

"(जब यूसुफ के भाइयों को ख़बर लगी तो आ पहुँचे और उनको अपना ग़ुलाम बताया और उन लोगों ने यूसुफ को गिनती के खोटे चन्द दरहम (बहुत थोड़े दाम पर बेच डाला) और वह लोग तो यूसुफ से बेज़ार हो ही रहे थे।)"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को उसके भाइयों ने बहुत थोड़े दाम में बेच दिया और वे उसे लेकर नफरत करते थे।**
- **हेतु (Reasoning): यह कार्य बहुत ही अन्यायपूर्ण और अमानवीय है। भाई द्वारा अपने ही रिश्तेदार को बेचने का यह कृत्य, न केवल यूसुफ के साथ, बल्कि मानवता के साथ भी अन्याय है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी व्यक्ति को उचित मूल्य पर बेचना और उसे किसी प्रकार की दयनीय स्थिति में डालना गलत माना जाता है। यह सिद्धांत अन्याय के खिलाफ है। यदि हम सामान्य व्यवहार के सिद्धांतों को देखें, तो किसी भी मानव को सिर्फ पैसे के लिए बेचना, चाहे वह रिश्तेदार हो या नहीं, पूरी तरह से अनुचित है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल तात्त्विक दृष्टिकोण से ही गलत नहीं है, बल्कि यह व्यवहार और दृष्टिकोण भी अन्यायपूर्ण है, जो मानवता के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
20	व्याप्ति	रिश्ते और मानवता के खिलाफ अमानवीय और अन्यायपूर्ण व्यवहार।

निष्कर्ष

इस आयत में यूसुफ को बहुत थोड़े दाम पर बेचे जाने का उल्लेख किया गया है, जो न केवल न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है, बल्कि यह मानवता के सिद्धांतों और रिश्तों का उल्लंघन भी है। न्याय दर्शन के

अनुसार, किसी व्यक्ति को उसके रिश्तेदार या किसी अन्य को बेचना और उसका शोषण करना अप्रत्याशित और अन्यायपूर्ण है, और यह किसी भी मानवीय या तात्त्विक तर्क के तहत सही नहीं ठहराया जा सकता।

आयत 21-25 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"(यूसुफ को लेकर मिस्र पहुँचे और वहाँ उसे बड़े नफ़े में बेच डाला) और मिस्र के लोगों से (अज़ीज़े मिस्र) जिसने (उनको ख़रीदा था अपनी बीवी (ज़ुलेख़ा) से कहने लगा इसको इज़्ज़त व आबरु से रखो अजब नहीं ये हमें कुछ नफा पहुँचाए या (शायद) इसको अपना बेटा ही बना लें और यू हमने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) में (जगह देकर) क़ाबिज़ बनाया और ग़रज़ ये थी कि हमने उसे ख़्वाब की बातों की ताबीर सिखायी और ख़ुदा तो अपने काम पर (हर तरह के) ग़ालिब व क़ादिर है मगर बहुतेरे लोग (उसको) नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को सम्मानित तरीके से रखा गया और उसे मिस्र में एक उच्च स्थान दिया गया।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा किया गया है कि यूसुफ को उसके अच्छे गुणों के कारण उच्च स्थान प्राप्त हुआ और उसे ख़्वाब की ताबीर सिखाई गई। परंतु यह कोई तर्कसंगत, वैज्ञानिक या प्रामाणिक आधार नहीं है कि किसी व्यक्ति को सिर्फ़ ईश्वर की इच्छा से सफलता मिलती है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, किसी के जीवन में सफलता केवल उसके गुण, प्रयास, और मेहनत से प्राप्त होनी चाहिए, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से। इसे तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में धार्मिक विश्वास को अत्यधिक बढ़ावा दिया गया है, बिना किसी व्यावहारिक आधार के।**

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"और जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचे तो हमने उनको हुक्म (नुबूवत) और इल्म अता किया और नेकी कारों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को नुबूवत (प्रकाशन) और इल्म (ज्ञान) दिया गया।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा किया गया है कि यूसुफ को ईश्वर द्वारा विशेष ज्ञान दिया गया। जबकि यह किसी प्रकार का प्रमाण नहीं है, और इसे सटीक रूप से तर्क के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): विज्ञान और तर्क के अनुसार, किसी को विशेष ज्ञान केवल ईश्वर से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत प्रयास, शिक्षा, और अनुभव से मिलता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत दृष्टिकोण से पूरी तरह से अप्रमाणित है।**

आयत 23-25 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 23

आयत का अनुवाद:

"और जिस औरत ज़ुलेखा के घर में यूसुफ रहते थे उसने अपने (नाजायज़) मतलब हासिल करने के लिए ख़ुद उनसे आरज़ू की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और (बे ताना) कहने लगी लो आओ यूसुफ ने कहा माज़अल्लाह वह (तुम्हारे मियाँ) मेरा मालिक हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह रखा है मै ऐसा ज़ुल्म क्यों कर सकता हूँ बेशक ऐसा ज़ुल्म करने वाले फलाह नहीं पाते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने ज़ुलेखा के प्रलोभन को ठुकरा दिया, क्योंकि वह अपने मालिक के प्रति निष्ठावान थे और बुरे कर्म से बचने का प्रयास कर रहे थे।**
- **हेतु (Reasoning): यूसुफ का दावा कि वह ऐसा "ज़ुल्म" नहीं कर सकते, यह नैतिकता और धार्मिकता पर आधारित है, लेकिन इस दावे में कोई सुसंगत तर्क नहीं है कि वह अपने मालिक से बहुत प्यार करते थे, और इस कारण से यह मामला पूरी तरह से धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): नैतिकता के दृष्टिकोण से, यह सही है कि कोई व्यक्ति गलत कार्य से बचने की कोशिश करता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, केवल व्यक्तिगत आदर्शों या धार्मिक विश्वासों पर**

भरोसा करना तर्कसंगत नहीं है। यह समाज में कानून और व्यावहारिक नियमों का पालन करने पर आधारित होना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत उस समय की नैतिक सोच और धार्मिक दृष्टिकोण को दिखाती है, लेकिन यह तर्कसंगत या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के लिए अधूरी है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:

"ज़ुलेखा ने तो उनके साथ (बुरा) इरादा कर ही लिया था और अगर ये भी अपने परवरदिगार की दलीन न देख चुके होते तो क़स्द कर बैठते (हमने उसको यूँ बचाया) ताकि हम उससे बुराई और बदकारी को दूर रख़े बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह दावा किया गया है कि यूसुफ ने अपनी अच्छाई और ईश्वर के मार्गदर्शन के कारण बुरे कर्म से बचने में सफलता पाई।
- **हेतु (Reasoning):** यह दावा पूरी तरह से धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि यूसुफ को भगवान ने बुराई से बचाया। इस दावे का कोई तर्कसंगत या प्रमाणिक आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** यदि किसी व्यक्ति के अच्छे कार्यों को केवल दैवीय शक्ति द्वारा नियंत्रित किया गया हो, तो यह तर्कसंगत रूप से समझने में कठिन है। एक न्यायिक दृष्टिकोण से, किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत प्रयास और समाज में मान्यता प्राप्त आदर्शों का पालन किया जाना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका तर्क केवल विश्वासों और आस्थाओं पर निर्भर है, जो न्यायिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता।

आयत 25

आयत का अनुवाद:

"और दोनों दरवाज़े की तरफ झपट पड़े और ज़ुलेख़ा (ने पीछे से उनका कुर्ता पकड़ कर खीचा और) फाड़ डाला और दोनों ने ज़ुलेखा के ख़ाविन्द को दरवाज़े के पास खड़ा पाया ज़ुलेख़ा झट (अपने शौहर से) कहने

लगी कि जो तुम्हारी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि या तो क़ैद कर दिया जाए।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ज़ुलेखा ने यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया और उसकी सज़ा कैद करने की बात की।**
- **हेतु (Reasoning): यह स्थिति समाज में नैतिकता और न्याय की स्थिति को व्यक्त करती है, लेकिन यह सिद्धांत केवल एक व्यक्तिगत कथा पर आधारित है और इसमें कोई निष्कलंक न्यायिक तर्क नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, आरोपों और दलीलों को केवल प्रमाणों और तथ्यों के आधार पर ही सत्यापित किया जाना चाहिए, न कि किसी विशिष्ट व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत आरोप और सजा के मामले को दिखाती है, लेकिन यह न्यायिक प्रक्रिया के सिद्धांतों से पूरी तरह मेल नहीं खाती। आरोपों के लिए प्रमाण और तर्कसंगत आधार का होना आवश्यक है, जो इस कथन में अनुपस्थित है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
23	प्रमाण, हेतु	यह दावा नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, बिना किसी तर्कसंगत प्रमाण के।
24	प्रमाण, हेतु	यूसुफ की अच्छाई और बुराई से बचने को केवल दैवीय शक्ति से जोड़ना व्यावहारिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है।
25	प्रमाण, हेतु	आरोपों और सज़ा का निर्धारण केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित है, जो न्यायिक तर्कों से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष

इन आयतों में दी गई कथाएँ धार्मिक विश्वासों और नैतिक शिक्षा पर आधारित हैं, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं की जा सकतीं। न्याय दर्शन के अनुसार, इन कथाओं में बुराई से बचने और आरोपों के निर्धारण के लिए वास्तविक प्रमाण और तर्क का होना जरूरी है, जो यहाँ अनुपस्थित है। इन आयतों में केवल ईश्वर के मार्गदर्शन और व्यक्तिगत विश्वासों का उच्चारण किया गया है, लेकिन इसका कोई व्यावहारिक आधार नहीं है।

आयत 23-25

आयत का अनुवाद:

"और जिस औरत ज़ुलेखा के घर में यूसुफ रहते थे उसने अपने (नाजायज़) मतलब हासिल करने के लिए ख़ुद उनसे आरज़ू की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और (बे ताना) कहने लगी लो आओ यूसुफ ने कहा माज़अल्लाह वह (तुम्हारे मियाँ) मेरा मालिक हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह रखा है मै ऐसा ज़ुल्म क्यों कर सकता हूँ बेशक ऐसा ज़ुल्म करने वाले फलाह नहीं पाते।

ज़ुलेखा ने तो उनके साथ (बुरा) इरादा कर ही लिया था और अगर ये भी अपने परवरदिगार की दलीन न देख चुके होते तो क़स्द कर बैठते (हमने उसको यूँ बचाया) ताकि हम उससे बुराई और बदकारी को दूर रख़े बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से था।

और दोनों दरवाज़े की तरफ झपट पड़े और ज़ुलेख़ा (ने पीछे से उनका कुर्ता पकड़ कर खीचा और) फाड़ डाला और दोनों ने ज़ुलेखा के ख़ाविन्द को दरवाज़े के पास खड़ा पाया ज़ुलेख़ा झट (अपने शौहर से) कहने लगी कि जो तुम्हारी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि या तो क़ैद कर दिया जाए।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reasoning) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने ज़ुलेखा से कथित रूप से कोई नाजायज़ संबंध बनाने से इंकार किया, और ज़ुलेखा ने उन्हें धोखा देने की कोशिश की।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथा केवल यूसुफ की शुद्धता को दिखाती है, लेकिन यह एक नैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत की जाती है, बिना किसी वास्तविक प्रमाण या तर्क के।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया कि यूसुफ केवल ईश्वर के मार्गदर्शन के कारण बुरे कार्य से बच पाए, जबकि तर्कसंगत दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह उनके नैतिक सिद्धांत और सोच पर आधारित होता।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत विशेष रूप से धार्मिक विश्वास और नैतिक शिक्षा पर निर्भर है, जो कि किसी तर्कसंगत, वैज्ञानिक या व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझने में कठिन है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
21	**प्रमाण**	**किसी व्यक्ति के लिए सफलता को केवल धार्मिक विश्वास से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है।**
22	**प्रमाण**	**नुबूवत और इल्म का दावा बिना किसी व्यावहारिक प्रमाण के।**
23-25	**हेतु और प्रमाण**	**नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोणों को तर्कसंगत तरीके से समझाने में असमर्थ।**

निष्कर्ष

इन आयतों में दी गई कथाएँ प्रामाणिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से पूरी तरह से समझाने योग्य नहीं हैं। इनमें दैवीय मार्गदर्शन और धार्मिक विश्वासों का ही प्रचलन है, जो मानवता और न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन कथाओं में अधिकतर नैतिक शिक्षा दी गई है, लेकिन यह सब तर्क और प्रमाण की कमी में है, जो इस विचारधारा को सार्वभौमिक और वैज्ञानिक रूप से लागू करने में कठिनाई पैदा करती है।

आयत 26-30 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 26
आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने कहा उसने ख़ुद (मुझसे मेरी आरज़ू की थी और ज़ुलेख़ा) के कुन्बे वालों में से एक गवाही देने वाले (दूध पीते बच्चे) ने गवाही दी कि अगर उनका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो ये सच्ची और वह झूठे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपनी रक्षा के लिए गवाह पेश किया, जो यह साबित करता है कि यदि कुर्ता आगे से फटा है तो ज़ुलेखा झूठी है।**
- **हेतु (Reasoning): इस गवाही का कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है, क्योंकि यह केवल एक कथात्मक आधार पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, गवाही का प्रमाण साक्षात तथ्यों और दृष्टांतों के आधार पर होना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): गवाह का बयान केवल परिस्थिति पर निर्भर करता है, लेकिन यह तर्कसंगत नहीं है कि केवल कुर्ते के फटे होने से अपराधी या निर्दोष का निर्धारण किया जाए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत न्याय प्रक्रिया से संबंधित नहीं है, क्योंकि इस प्रकार का प्रमाण केवल सांस्कृतिक या धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 27
आयत का अनुवाद:
"और अगर उनका कुर्ता पींछे से फटा हुआ हो तो ये झूठी और वह सच्चे।"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): गवाही दी जाती है कि यदि कुर्ता पीछे से फटा हो तो यूसुफ निर्दोष है और ज़ुलेखा झूठी है।**
- **हेतु (Reasoning): यह प्रमाण केवल कपड़े के फटने के आधार पर एक व्यक्ति के दोष या निर्दोष होने को प्रमाणित करता है, जो न्यायिक दृष्टिकोण से अपूर्ण और अवैज्ञानिक है। सही न्यायिक प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): वास्तविक जीवन में, किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने का निर्धारण वस्त्र के स्थिति से नहीं, बल्कि साक्ष्यों, गवाहों, और दलीलों से होना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायिक प्रक्रिया में तथ्यों और प्रमाणों का विवेचन नहीं करती और इस प्रकार इसे एक वैज्ञानिक या न्यायिक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक माना जा सकता है।**

आयत 28
आयत का अनुवाद:

"फिर जब अज़ीज़े मिस्र ने उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी औरत से) कहने लगा ये तुम ही लोगों के चलत्तर है उसमें शक नहीं कि तुम लोगों के चलत्तर बड़े (ग़ज़ब के) होते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): अज़ीज़ ने देखा कि कुर्ता पीछे से फटा हुआ था, तो उसने ज़ुलेखा को दोषी ठहराया और कहा कि यह उनका "चलत्तर" है।
- हेतु (Reasoning): इस निर्णय का आधार केवल एक स्थिति पर है, जबकि किसी व्यक्ति के दोषी होने के लिए और भी साक्ष्य और गवाहों की आवश्यकता होती है। न्यायिक प्रक्रिया में केवल वस्त्र की स्थिति से निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।
- उदाहरण (Example): यदि किसी के खिलाफ आरोप लगाए जाते हैं, तो केवल एक स्थिति या वस्तु से दोष साबित करना पर्याप्त नहीं है। वैज्ञानिक या न्यायिक प्रक्रियाओं में अधिक प्रमाणों की आवश्यकता होती है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायिक प्रक्रिया में निष्कर्ष निकालने के लिए अपर्याप्त है, क्योंकि यह केवल एक वस्तु की स्थिति पर निर्भर करती है।

आयत 29
आयत का अनुवाद:
"(और यूसुफ से कहा) ऐ यूसुफ इसको जाने दो और (औरत से कहा) कि तू अपने गुनाह की माफी माँग क्योंकि बेशक तू ही सरतापा ख़तावार है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): अज़ीज़ ने यूसुफ से कहा कि वह ज़ुलेखा को जाने दें और ज़ुलेखा को अपने गुनाह की माफी माँगने के लिए कहा।
- हेतु (Reasoning): यह समाधान केवल विश्वास पर आधारित है और कोई तर्कसंगत न्यायिक प्रक्रिया प्रस्तुत नहीं करता। एक वास्तविक न्यायिक प्रक्रिया में दोषी को दंडित किया जाता है और निर्दोष को सम्मानित किया जाता है, लेकिन यहाँ दुष्कर्म के लिए केवल माफी की बात की जा रही है।

- **उदाहरण (Example): यदि कोई अपराध करता है, तो उसे केवल माफी देने की बजाय उसकी पूरी गुनाह के आधार पर न्यायिक निर्णय लिया जाना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है, क्योंकि यह केवल माफी की बात करती है और इसमें कोई वस्तुनिष्ठ दंड या न्याय की प्रक्रिया नहीं दिखाई जाती।**

आयत 30

आयत का अनुवाद:

"और शहर (मिस्र) में औरतें चर्चा करने लगी कि अज़ीज़ (मिस्र) की बीबी अपने ग़ुलाम से (नाजायज़) मतलब हासिल करने की आरज़ू मन्द है बेशक गुलाम ने उसे उलफत में लुभाया है हम लोग तो यक़ीनन उसे सरीही ग़लती में मुब्तिला देखते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): शहर की औरतों ने ज़ुलेखा के खिलाफ आरोप लगाए और उसे नाजायज़ काम करने का दोषी ठहराया।**
- **हेतु (Reasoning): यह आलोचना समाज की भावना और राय पर आधारित है, जो न्यायिक दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति की दोषिता को प्रमाणित नहीं कर सकती। केवल व्यक्तिगत या सामाजिक राय से निष्कर्ष निकालना न्याय की प्रक्रिया नहीं हो सकती।**
- **उदाहरण (Example): समाज में फैली अफवाहों और गलत धारणाओं से किसी व्यक्ति का दोष सिद्ध नहीं हो सकता। इसे केवल प्रमाणित साक्ष्यों और तथ्यों के आधार पर किया जाना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है क्योंकि यह केवल समाज के विचारों और अफवाहों पर आधारित है, जो सटीक प्रमाण नहीं हो सकते।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना

26	**प्रमाण, हेतु**	**केवल कपड़े की स्थिति से दोषी या निर्दोष साबित करना न्यायिक दृष्टिकोण से अपूर्ण है।**
27	**प्रमाण, हेतु**	**गवाहों का बयान वस्त्र की स्थिति पर आधारित है, जो न्यायिक प्रक्रिया से मेल नहीं खाता।**
28	**प्रमाण, हेतु**	**केवल वस्त्र की स्थिति से निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। यह न्यायिक निर्णय में अपर्याप्त है।**
29	**प्रमाण, हेतु**	**माफी देना न्यायिक दृष्टिकोण से सही प्रक्रिया नहीं है। अपराध का उचित दंड निर्धारित किया जाना चाहिए।**
30	**प्रमाण, हेतु**	**समाज की अफवाहों पर आधारित आरोपों से किसी व्यक्ति की दोषिता नहीं सिद्ध हो सकती।**

निष्कर्ष

इन आयतों में न्यायिक दृष्टिकोण से समस्याएँ हैं क्योंकि आरोपों का निर्धारण वस्त्र की स्थिति, अफवाहों, और व्यक्तिगत राय पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी अपराध या दोष को साबित करने के लिए प्रमाणित साक्ष्य और तर्कसंगत दलीलें होनी चाहिए, जो इन आयतों में नहीं दी गई हैं।

आयत 31-35 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 31

आयत का अनुवाद:

"तो जब उन औरतों ने उसे देखा तो उसके बड़ा हसीन पाया तो सब के सब ने (बे खुदी में) अपने अपने हाथ

काट डाले और कहने लगी हाय अल्लाह ये आदमी नहीं है ये तो हो न हो बस एक मुअज़िज़ (इज़्ज़त वाला) फरिश्ते है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): औरतों ने यूसुफ को देखा और उसकी खूबसूरती को देखकर अपने हाथों को काट लिया। फिर उन्होंने कहा कि वह आदमी नहीं, बल्कि एक फरिश्ता है।**
- **हेतु (Reasoning): यह घटना अत्यधिक अतिशयोक्ति पर आधारित है, क्योंकि किसी व्यक्ति की सुंदरता के कारण इस तरह का अभूतपूर्व व्यवहार न्यायिक दृष्टिकोण से अक्षम्य है। किसी व्यक्ति की पहचान या अच्छाई का मूल्यांकन केवल उसकी बाहरी सुंदरता पर नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जीवन में, किसी की अच्छाई या नेक काम को उसकी शारीरिक सुंदरता से नहीं मापा जाता। यह पूरी तरह से गलत होगा कि किसी को केवल उसकी सुंदरता पर ही दोषी या अपाराधी ठहराया जाए।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में तर्कसंगतता की कमी है। किसी की उपस्थिति के कारण अपर्याप्त और अवास्तविक प्रतिक्रिया दी जाती है, जो न्यायिक दृष्टिकोण से अनुचित है।**

आयत 32
आयत का अनुवाद:
"तब ज़ुलेख़ा उन औरतों से बोली कि बस ये वही तो है जिसकी बदौलत तुम सब मुझे मलामत (बुरा भला) करती थीं और हाँ बेशक मैं उससे अपना मतलब हासिल करने की खुद उससे आरज़ू मन्द थी मगर ये बचा रहा और जिस काम का मैं हुक्म देती हूँ अगर ये न करेगा तो ज़रुर क़ैद भी किया जाएगा और ज़लील भी होगा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ज़ुलेखा ने स्वीकार किया कि उसने यूसुफ से गलत तरीके से संपर्क करने की कोशिश की थी और यदि यूसुफ ने उसका आदेश न माना होता, तो उसे सजा दी जाती।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ ज़ुलेखा अपनी गलती को छुपाने के लिए यूसुफ पर आरोप लगाती है। यह तर्क नैतिक और न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि अपराधी की स्वीकृति को सच्चाई या न्याय नहीं माना जा सकता।**

- **उदाहरण (Example):** यदि किसी व्यक्ति को कोई ग़लत काम करने पर सजा दी जाती है, तो यह सजा केवल उसकी गलती के आधार पर होनी चाहिए, न कि किसी अन्य के साथ अपनी ग़लती को छिपाने के लिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत न्यायिक दृष्टिकोण से असंगत है, क्योंकि इसमें दोषी को अपनी गलती छिपाने का मौका दिया जा रहा है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:

"ऐ मेरे पालने वाले जिस बात की ये औरते मुझ से ख़्वाहिश रखती हैं उसकी निस्वत (बदले में) मुझे क़ैद ख़ानों ज़्यादा पसन्द है और अगर तू इन औरतों के फ़रेब मुझसे दफा न फरमाएगा तो (शायद) मै उनकी तरफ माएल (झुक) हो जाँऊ ले तो जाओ और जाहिलों में से शुमार किया जाऊँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यूसुफ़ अपने परवरदिगार से प्रार्थना करता है कि उसे इन औरतों के फरेब से बचाया जाए।
- **हेतु (Reasoning):** यह दृश्य यूसुफ की नैतिक सच्चाई और ईमानदारी को प्रदर्शित करता है। यहाँ यूसुफ ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि यदि उसे अपने चरित्र की रक्षा करनी है, तो उसे क़ैद को स्वीकार करना पड़ेगा, बजाय कि इन औरतों के बहकावे में आकर गलत रास्ते पर चलने के।
- **उदाहरण (Example):** किसी व्यक्ति के लिए नैतिक निर्णय लेना, चाहे वह कठिन हो, अक्सर न्यायिक प्रक्रिया और सामाजिक आदर्शों के अनुरूप होता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में यूसुफ़ का नैतिक निर्णय प्रशंसनीय है, क्योंकि उसने अपने चरित्र की रक्षा के लिए क़ैद को पसंद किया। यह दर्शाता है कि सही और गलत के बीच निर्णय करना एक महत्वपूर्ण और न्यायिक प्रक्रिया है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:

"तो उनके परवरदिगार ने उनकी सुन ली और उन औरतों के मकर को दफा कर दिया इसमें शक नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफकार है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भगवान ने यूसुफ़ की प्रार्थना को सुना और औरतों के मकर (फरेब) को नष्ट कर दिया।**
- **हेतु (Reasoning): इस आयत में धार्मिक विश्वासों पर आधारित एक निर्णय लिया गया है, जो न्यायिक प्रक्रिया में इस प्रकार की किसी भी घटनाओं का न्यायिक समाधान नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): न्यायिक प्रक्रिया को केवल ईश्वर के आदेश पर नहीं चलाया जा सकता; इसके लिए वस्तुनिष्ठ साक्ष्य, गवाह, और तथ्यों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में न्यायिक प्रक्रिया और प्रमाण की स्पष्टता की कमी है, क्योंकि इसे केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर हल किया जाता है।**

आयत 35
आयत का अनुवाद:
"फिर (अज़ीज़ मिस्र और उसके लोगों ने) बावजूद के (यूसुफ की पाक दामिनी की) निशानियाँ देख ली थी उसके बाद भी उनको यही मुनासिब मालूम हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ़ की पाक दामिनी की निशानियाँ देखकर भी, अज़ीज़ और मिस्र के लोग उसे सही नहीं मानते।**
- **हेतु (Reasoning): यह स्थिति यह दिखाती है कि किसी व्यक्ति का निर्दोष होना केवल बाहरी साक्ष्य से साबित नहीं हो सकता, बल्कि सही प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): न्यायिक मामलों में, यदि पर्याप्त साक्ष्य और तथ्यों के बावजूद कोई व्यक्ति दोषी ठहराया जाता है, तो यह न्याय की प्रक्रिया के खिलाफ है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में न्याय के लिए आवश्यक तथ्यों और साक्ष्यों का मूल्यांकन नहीं किया गया, जो न्यायिक दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
31	प्रमाण, प्रमेय	व्यक्ति की बाहरी सुंदरता को आधार बनाकर इस प्रकार के अत्यधिक व्यवहार को न्यायिक दृष्टिकोण से स्वीकार नहीं किया जा सकता।
32	प्रमाण, हेतु	ज़ुलेखा का आरोप छिपाने और अपनी गलती को स्वीकार करने की बजाय यूसुफ पर आरोप मढ़ना न्यायिक दृष्टिकोण से असंगत है।
33	प्रमाण, हेतु	यूसुफ का नैतिक निर्णय प्रशंसनीय है, लेकिन यह प्रक्रिया न्यायिक दृष्टिकोण से पर्याप्त नहीं है।
34	प्रमाण, हेतु	यह निर्णय धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जो न्यायिक प्रक्रियाओं में असंगत है।
35	प्रमाण, हेतु	इस आयत में न्यायिक प्रक्रिया और प्रमाण की स्पष्टता की कमी है, क्योंकि इसे केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर हल किया जाता है।

निष्कर्ष

इन आयतों में भी न्यायिक प्रक्रिया और तार्किक दृष्टिकोण की कमी है। यद्यपि यूसुफ का नैतिक निर्णय प्रशंसनीय है, लेकिन न्यायिक दृष्टिकोण से तथ्यों, गवाहों और प्रमाणों का पर्याप्त मूल्यांकन नहीं किया गया है।

आयत 36-40 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 36

आयत का अनुवाद:

"यूसुफ के साथ और भी दो जवान आदमी (क़ैद ख़ाने) में दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैं अंगूर निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने सिर पर रोटियाँ देखी हैं जिन्हें चिड़ियाँ खा रही हैं। यूसुफ, हमें इसका अर्थ बताओ, क्योंकि हम तुम्हें नेक समझते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दो कैदी यूसुफ से अपने सपनों का अर्थ जानने की इच्छा व्यक्त करते हैं, क्योंकि वे यूसुफ को नेक और ज्ञानवान मानते हैं।**
- **हेतु (Reason): स्वप्न और उसकी व्याख्या केवल व्यक्तिगत विश्वासों और प्रतीकों पर आधारित होती है। यह तर्कसंगत प्रमाण के रूप में अपर्याप्त है।**
- **उदाहरण (Example): स्वप्न का अर्थ हमेशा स्पष्ट और सत्य नहीं होता। व्यक्तिगत दृष्टिकोण और परिस्थितियों के आधार पर इसका भिन्न अर्थ हो सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में स्वप्न की व्याख्या को ज्ञान का प्रमाण माना गया है, लेकिन यह वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से पर्याप्त नहीं है।**

आयत 37

आयत का अनुवाद:

"यूसुफ ने कहा, जो खाना तुम्हें (क़ैद ख़ाने से) दिया जाता है वह आने से पहले ही मैं तुम्हें तुम्हारे सपनों का अर्थ बता दूँगा। यह ज्ञान मेरे परवरदिगार ने मुझे दिया है। मैं उन लोगों के धर्म को छोड़ चुका हूँ जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और आख़िरत के भी इंकारी हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमाण (Valid Knowledge) और प्रमेय (Object of Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने ज्ञान को ईश्वर की ओर से दिया गया बताया और धर्म और आख़िरत के इंकार करने वालों के धर्म को अस्वीकार कर दिया।**
- **हेतु (Reason): तर्कसंगतता के लिए आवश्यक है कि दावे को सत्यापित करने के लिए प्रमाण प्रस्तुत किए जाएँ। केवल व्यक्तिगत विश्वास को सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार करना तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।**
- **उदाहरण (Example): सत्यापित ज्ञान के लिए वैज्ञानिक प्रमाण या अन्य वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्यक्तिगत विश्वासों पर आधारित है और तार्किक रूप से अप्रमाणित है।**

आयत 38

आयत का अनुवाद:

"मैं अपने बाप-दादा इब्राहीम, इसहाक़, और याक़ूब के धर्म का अनुसरण करता हूँ। यह उचित नहीं कि हम ईश्वर के साथ किसी और को साझेदार मानें। यह ईश्वर की कृपा है हम पर और सभी लोगों पर, लेकिन अधिकांश लोग उसका आभार नहीं मानते।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance) और हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने धर्म को सत्य और ईश्वर की कृपा का प्रमाण बताया।
- हेतु (Reason): यह दावा ईश्वर की कृपा और सत्य धर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य साबित करने के लिए तर्कसंगत प्रमाणों की कमी है।
- उदाहरण (Example): किसी भी धर्म को सत्य या श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए, अन्य धर्मों के साथ इसकी तुलना और वस्तुनिष्ठ प्रमाण आवश्यक हैं।
- निगमन (Conclusion): यह आयत केवल व्यक्तिगत और सांस्कृतिक विश्वासों को व्यक्त करती है, जो तार्किक रूप से सार्वभौमिक नहीं है।

आयत 39

आयत का अनुवाद:

"ऐ मेरे कैदखाने के साथियों, क्या अलग-अलग माबूद बेहतर हैं या एकमात्र सर्वशक्तिमान ईश्वर?"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने बहुदेववाद की तुलना एक ईश्वर की उपासना से की।
- हेतु (Reason): यह तुलना सत्यता के बजाय विश्वास और तर्क के आधार पर की गई है।
- उदाहरण (Example): अलग-अलग विश्वासों का सम्मान करते हुए, किसी एक धर्म या विश्वास को श्रेष्ठ मानने के लिए व्यापक तर्क और प्रमाण की आवश्यकता होती है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत रूप से धार्मिक विश्वासों के आधार पर तुलना करती है, लेकिन सार्वभौमिक दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 40

आयत का अनुवाद:

"तुम लोग ईश्वर को छोड़कर उन नामों की पूजा करते हो जिन्हें तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने गढ़ लिया है। ईश्वर ने उनके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा। निर्णय का अधिकार केवल ईश्वर को है। उसने आदेश दिया है कि केवल उसी की उपासना करो। यही सच्चा धर्म है, लेकिन अधिकांश लोग इसे नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): बहुदेववाद को गढ़ा हुआ बताया गया और ईश्वर की एकता को सत्य धर्म घोषित किया गया।**
- **हेतु (Reason): यह दावा केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। इसे सार्वभौमिक सत्य सिद्ध करने के लिए वस्तुनिष्ठ प्रमाण की आवश्यकता है।**
- **उदाहरण (Example): कोई भी धर्म या विश्वास अपने सत्य होने का दावा करता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक बनाने के लिए तर्क और प्रमाण आवश्यक हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों को प्रस्तुत करती है, लेकिन तर्कसंगत दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
36	प्रमेय, प्रमाण	स्वप्न की व्याख्या को ज्ञान मानना तार्किक रूप से अपर्याप्त है।
37	प्रमाण, प्रमेय	व्यक्तिगत विश्वास को सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।
38	व्याप्ति, हेतु	व्यक्तिगत विश्वासों को सार्वभौमिक रूप में सिद्ध करने के लिए प्रमाण नहीं हैं।
39	उपमान	धार्मिक विश्वासों की तुलना तर्क के बजाय विश्वास पर आधारित है।

40	**प्रमाण, व्याप्ति**	**धार्मिक विश्वासों को तर्कसंगत रूप से प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं।**

निष्कर्ष

आयत 36-40 में प्रस्तुत विचार धार्मिक विश्वासों और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, इन्हें तार्किक और वस्तुनिष्ठ प्रमाणों के आधार पर सत्य सिद्‌ध नहीं किया जा सकता। धार्मिक विश्वास को सत्य सिद्‌ध करने के लिए व्यापक और तर्कसंगत प्रमाण आवश्यक हैं।

आयत 41-45 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 41

आयत का अनुवाद:

"यूसुफ ने कहा, 'तुम दोनों में से एक, जिसने अंगूर निचोड़ते देखा, वह रिहा होकर अपने मालिक को शराब पिलाएगा। और दूसरा, जिसने रोटियाँ सर पर देखीं, उसे सूली दी जाएगी, और चिड़ियाँ उसके सिर से मांस खाएँगी। यह फैसला हो चुका है।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने साथियों के सपनों की व्याख्या की और उनके भविष्य का फैसला बताया।**
- **हेतु (Reason): यूसुफ के द्वारा किया गया यह दावा केवल स्वप्न के आधार पर है, जो तर्कसंगत प्रमाण के बिना अस्थिर है।**
- **उदाहरण (Example): स्वप्न विज्ञान में सपनों की व्याख्या संभावनाओं पर आधारित होती है और इसे सटीक भविष्यवाणी के रूप में स्वीकार करना तर्कहीन है।**
- **निगमन (Conclusion): स्वप्न को सत्य और भविष्यवाणी का माध्यम मानना तार्किक दृष्टि से प्रमाणित नहीं है।**

आयत 42

आयत का अनुवाद:

"उन दोनों में से जिसने रिहा होना था, उससे यूसुफ ने कहा कि अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना। लेकिन शैतान ने उसे अपने मालिक से ज़िक्र करना भुला दिया, और यूसुफ क़ैद में कई सालों तक रहे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने रिहा होने की संभावना को दूसरे कैदी के माध्यम से व्यक्त किया।**
- **हेतु (Reason): शैतान द्वारा भुलाने का दावा बिना किसी तार्किक आधार के किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): एक व्यक्ति का भूल जाना उसकी अपनी मानसिक स्थिति और परिस्थितियों पर निर्भर करता है, इसे किसी अदृश्य शक्ति के प्रभाव से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में घटनाओं को शैतान के प्रभाव से जोड़ने का दावा तार्किक आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 43

आयत का अनुवाद:

"बादशाह ने सपना देखा: सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ, फिर सात सूखी बालियाँ। उसने दरबारियों से इसका अर्थ पूछा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सपना एक प्रतीकात्मक संदेश के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **हेतु (Reason): सपनों का अर्थ स्पष्ट रूप से किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): प्रतीकात्मक सपनों की व्याख्या संस्कृतियों और विश्वासों पर निर्भर करती है, जो सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकते।**
- **निगमन (Conclusion): सपनों को भविष्यवाणी या सत्यता का माध्यम मानना तर्कसंगत दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 44

आयत का अनुवाद:

"दरबारियों ने कहा, यह तो बस उलझे हुए सपने हैं, और हम ऐसे सपनों की व्याख्या नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दरबारियों ने सपने को अस्पष्ट और व्याख्या के अयोग्य माना।**
- **हेतु (Reason): सपनों की व्याख्या के लिए कोई तार्किक या वैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं बताई गई है।**
- **उदाहरण (Example): किसी भी सपने को मान्यता देने के लिए उसके तार्किक प्रमाण आवश्यक हैं।**
- **निगमन (Conclusion): दरबारियों द्वारा व्यक्त की गई शंका तर्कसंगत है। सपने को व्याख्या के लिए मान्यता देना उचित नहीं है।**

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"जो व्यक्ति रिहा हुआ था, उसे लंबे समय बाद यूसुफ की बात याद आई। उसने बादशाह से कहा, 'मुझे (क़ैदखाने तक) जाने दें, ताकि मैं इसका अर्थ बता सकूँ।'"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): रिहा हुआ व्यक्ति सपनों की व्याख्या के लिए यूसुफ से संपर्क करने की अनुमति मांगता है।**
- **हेतु (Reason): यह धारणा कि केवल यूसुफ ही सपनों का सही अर्थ बता सकते हैं, प्रमाण के बिना है।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति की विशेषज्ञता को प्रमाणित करने के लिए उसकी शिक्षा, अनुभव, और प्रक्रिया को समझना आवश्यक है।**
- **निगमन (Conclusion): सपनों की व्याख्या के लिए केवल यूसुफ पर निर्भर होना तर्कहीन है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
41	प्रमाण, प्रमेय	स्वप्न की व्याख्या को सत्य मानना तार्किक प्रमाणों के बिना अपर्याप्त है।
42	हेतु, व्याप्ति	घटनाओं को शैतान के प्रभाव से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है।
43	प्रमेय, उपमान	सपनों को प्रतीकात्मक संदेश के रूप में मान्यता देने के लिए प्रमाण की कमी है।
44	प्रमाण	दरबारियों का सपनों को व्याख्या योग्य न मानना तार्कसंगत है।
45	व्याप्ति, प्रमाण	सपनों की व्याख्या के लिए यूसुफ पर निर्भरता तर्कहीन है।

निष्कर्ष

आयत 41-45 में सपनों को सत्य और भविष्यवाणी का माध्यम माना गया है। न्याय दर्शन के आधार पर, यह दृष्टिकोण तार्किक और प्रमाण आधारित नहीं है। सपनों की व्याख्या को तर्कसंगत और वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करना आवश्यक है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 46-50 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 46

आयत का अनुवाद:

"(वह आदमी यूसुफ के पास जाकर कहता है) 'ऐ यूसुफ, ऐ सच्चे, हमें यह बताओ कि सात मोटी गायों को सात पतली गायें खा जाती हैं और सात हरी बालियां और सात सूखी बालियां। मैं इसे समझकर लोगों को बताऊँगा ताकि वे आपकी कदर जानें।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यूसुफ को सच्चा और सक्षम मानते हुए स्वप्न की व्याख्या के लिए संपर्क किया गया।
- **हेतु (Reason):** यह मान लेना कि केवल यूसुफ ही स्वप्न की व्याख्या कर सकते हैं, बिना तार्किक आधार के है।
- **उदाहरण (Example):** एक विशिष्ट व्यक्ति के पास स्वप्न की व्याख्या की अनोखी क्षमता होने का दावा तब तक अधूरा है, जब तक इसे प्रमाणित न किया जाए।
- **निगमन (Conclusion):** स्वप्न की व्याख्या के लिए यूसुफ पर निर्भरता तर्कसंगत प्रमाणों के बिना उचित नहीं है।

आयत 47-48

आयत का अनुवाद:

"यूसुफ ने कहा: 'तुम लोग सात वर्षों तक लगातार मेहनत करो। जो कुछ तुम फसल काटो, उसे बालियों में रहने दो, केवल उतना लो, जितना खाने के लिए जरूरी हो। उसके बाद सात कठिन (सूखे) वर्ष आएंगे, जो तुमने पहले संग्रह किया होगा, वह सब खा लिए जाएगा। केवल थोड़ा सा बचाना जो बीज के लिए आवश्यक हो।'"

चुना गया न्याय तत्व: **व्याप्ति (Invariable Concomitance) और प्रमेय (Object of Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** भविष्य में सात वर्षों का सूखा और सात वर्षों की संपन्नता की भविष्यवाणी की गई।
- **हेतु (Reason):** यह दावा बिना किसी प्राकृतिक, भौगोलिक, या जलवायु वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** सूखे या उपजाऊ वर्षों की भविष्यवाणी के लिए पर्यावरणीय अध्ययन और आँकड़ों की आवश्यकता होती है।
- **निगमन (Conclusion):** बिना प्राकृतिक और वैज्ञानिक प्रमाणों के यह भविष्यवाणी काल्पनिक है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"उसके बाद एक वर्ष आएगा जिसमें बहुत बारिश होगी और लोग अंगूरों का रस निकालेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भविष्य में उपजाऊ वर्ष की भविष्यवाणी की गई।**
- **हेतु (Reason): वर्षा और फसलों की प्रचुरता की गारंटी के लिए वैज्ञानिक और पर्यावरणीय आँकड़ों की जरूरत होती है, जो यहां अनुपस्थित हैं।**
- **उदाहरण (Example): केवल स्वप्न और विश्वास के आधार पर ऐसी भविष्यवाणियां तर्कसंगत प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं की जा सकतीं।**
- **निगमन (Conclusion): वर्षा और फसल की भविष्यवाणी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में असत्यापित है।**

आयत 50
आयत का अनुवाद:
"बादशाह ने कहा: 'यूसुफ को मेरे पास लाओ।' लेकिन यूसुफ ने कहा: 'अपने मालिक के पास लौट जाओ और उनसे उन औरतों के बारे में पूछो जिन्होंने अपने हाथ काट डाले थे।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपनी निर्दोषता को साबित करने के लिए पुराने प्रकरण की जांच की मांग की।**
- **हेतु (Reason): अपने आपको निर्दोष साबित करने के लिए पुराने प्रकरण को उठाना सही हो सकता है, लेकिन यह न्याय प्रणाली पर सवाल उठाता है जो केवल स्वप्नों के आधार पर चल रही है।**
- **उदाहरण (Example): यदि न्यायिक प्रणाली तार्किक और साक्ष्यों पर आधारित हो, तो स्वप्न के आधार पर किसी की बेगुनाही तय नहीं होनी चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): न्याय व्यवस्था में केवल सपने और विश्वास पर भरोसा करना तार्किक और प्रमाणिक दृष्टि से कमजोर है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
46	प्रमाण, उपमान	स्वप्न की व्याख्या के लिए यूसुफ पर निर्भरता तर्कहीन है।
47-48	व्याति, प्रमेय	भविष्यवाणी प्राकृतिक और वैज्ञानिक प्रमाणों के बिना अधूरी है।
49	उपमान, प्रमाण	वर्षा और फसल की भविष्यवाणी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बिना असत्यापित है।
50	प्रमेय, व्याति	स्वप्न आधारित न्याय प्रणाली तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है।

निष्कर्ष

आयत 46-50 में स्वप्न की व्याख्या को सत्य और भविष्यवाणी का माध्यम माना गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह दृष्टिकोण तार्किक प्रमाणों और वैज्ञानिक आधार के बिना कमजोर है। भविष्य की घटनाओं को समझने के लिए तार्किक और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 51-55 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 51

आयत का अनुवाद:
"जब बादशाह ने औरतों से पूछा कि तुमने यूसुफ से क्या चाहा था? उन्होंने कहा, 'हाशा अल्लाह, हमने यूसुफ में कोई बुराई नहीं देखी।' तब अज़ीज़ की बीवी ने कहा, 'सच यह है कि मैंने ही उनसे संबंध बनाने की कोशिश की थी और वह सच्चे हैं।'"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ निर्दोष हैं, यह अब साबित हो गया।**
- **हेतु (Reason): ज़ुलेख़ा की स्वीकारोक्ति और अन्य औरतों का समर्थन यूसुफ की निर्दोषता के पक्ष में प्रस्तुत किया गया।**

- उदाहरण (Example): यह तर्क ज़ुलेख़ा के आत्मस्वीकार पर आधारित है, जो व्यक्तिगत रुचि और परिस्थितियों के दबाव के कारण हो सकता है।
- निगमन (Conclusion): व्यक्तिगत स्वीकारोक्ति, विशेष रूप से दबाव में दी गई, प्रमाण के रूप में अपर्याप्त है।

आयत 52

आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने कहा, 'यह मैंने इसलिए कहा ताकि बादशाह को यह ज्ञात हो जाए कि मैंने ग़ैरहाज़िरी में भी उसकी अमानत में ख़यानत नहीं की। अल्लाह कभी भी ख़यानत करने वालों की मक्कारी को सफल नहीं करता।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने कभी भी बादशाह या अज़ीज़ की संपत्ति या प्रतिष्ठा को क्षति नहीं पहुंचाई।
- हेतु (Reason): यूसुफ अपनी सफाई प्रस्तुत करते हुए, खुद को अमानतदार साबित करना चाहते हैं।
- उदाहरण (Example): केवल यूसुफ का खुद को निर्दोष बताना न्याय का आधार नहीं बन सकता; इसके लिए निष्पक्ष गवाह और प्रमाण आवश्यक हैं।
- निगमन (Conclusion): सत्य और अमानतदारी का प्रमाण देने के लिए केवल कथन पर्याप्त नहीं है।

आयत 53

आयत का अनुवाद:
"मैं अपने नफ्स को पवित्र नहीं कहता क्योंकि नफ्स बुराई की ओर उकसाता है, सिवाय उसके जिस पर अल्लाह की दया हो। मेरा परवरदिगार क्षमाशील और दयालु है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मनुष्य का स्वभाव बुराई की ओर झुकाव रखता है, लेकिन ईश्वर की दया उसे बचाती है।
- हेतु (Reason): यह तर्क बिना किसी मनोवैज्ञानिक या सामाजिक अध्ययन के व्यक्त किया गया है।
- उदाहरण (Example): मानव स्वभाव के अध्ययन (जैसे मनोविज्ञान) में यह निष्कर्ष विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करता है, केवल ईश्वरीय दया पर आधारित नहीं हो सकता।
- निगमन (Conclusion): यह तर्क मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से अधूरा है।

आयत 54

आयत का अनुवाद:
"बादशाह ने कहा, 'यूसुफ को मेरे पास लाओ। मैं उसे अपने काम के लिए चुन लूंगा।' जब बादशाह ने यूसुफ से बात की तो उनकी योग्यता स्पष्ट हुई। उसने कहा, 'आज से तुम हमारे शासन में आदरणीय और विश्वसनीय हो।'"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को उनकी योग्यता और सच्चाई के आधार पर उच्च पद दिया गया।
- हेतु (Reason): केवल बातचीत के आधार पर योग्यता का निर्णय करना न्यायोचित नहीं है।
- उदाहरण (Example): प्रशासनिक क्षमता का मूल्यांकन अनुभव, प्रदर्शन और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए।
- निगमन (Conclusion): बिना ठोस आधार के पद देना तर्कसंगत और निष्पक्ष शासन के विपरीत है।

आयत 55

आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने कहा, 'मुझे देश के खजानों का प्रबंधक नियुक्त करें क्योंकि मैं इसका खजांची और इसका हिसाब-किताब जानता हूँ।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपनी क्षमताओं को आधार बनाकर खजांची बनने की पेशकश की।**
- **हेतु (Reason): केवल आत्मविश्वास के आधार पर उच्च पद देना शासन की जवाबदेही और निष्पक्षता पर प्रश्न खड़े करता है।**
- **उदाहरण (Example): नियुक्ति प्रक्रिया में योग्यता, अनुभव और पूर्व प्रदर्शन का आकलन आवश्यक है।**
- **निगमन (Conclusion): बिना सत्यापन और प्रतिस्पर्धा के ऐसी नियुक्ति एकपक्षीय है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
51	**हेतु, प्रमाण**	**ज़ुलेख़ा की स्वीकारोक्ति दबाव और परिस्थिति पर आधारित हो सकती है।**
52	**प्रमेय, व्याति**	**व्यक्तिगत कथन न्याय का आधार नहीं बन सकता।**
53	**हेतु, प्रमाण**	**मानव स्वभाव के लिए केवल ईश्वरीय दया पर निर्भरता अधूरी है।**
54	**उपमान, प्रमाण**	**बिना ठोस आधार के पद देना प्रशासनिक दृष्टि से कमजोर है।**
55	**प्रमाण, प्रमेय**	**आत्मनिर्भरता के आधार पर नियुक्ति न्यायपूर्ण प्रक्रिया के अभाव को दर्शाती है।**

निष्कर्ष

आयत 51-55 में यूसुफ को निर्दोष और योग्य बताने की कोशिश की गई है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार यह प्रक्रिया तार्किक और प्रमाणिक दृष्टि से कमजोर है। न्यायिक और प्रशासनिक निर्णय साक्ष्यों और निष्पक्ष प्रक्रिया पर आधारित होने चाहिए, न कि व्यक्तिगत कथनों और आत्मनिर्भरता पर।

आयत 56-60 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 56

आयत का अनुवाद:
"(यूसुफ को शाही खज़ाने का अफसर नियुक्त किया गया) और हमने यूसुफ को यूं मिस्र पर अधिकार दे दिया कि वह जहाँ चाहें रह सकें। हम जिसे चाहते हैं, अपना फज़्ल (कृपा) प्रदान करते हैं और नेक काम करने वालों का बदला व्यर्थ नहीं करते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ को उनकी योग्यता और अल्लाह की कृपा के आधार पर मिस्र पर शासन का अधिकार दिया गया।
- हेतु (Reason): यहां निर्णय का आधार ईश्वरीय कृपा और नेक कार्यों को बताया गया है, जबकि शासन का दायित्व तार्किक और व्यवस्थित प्रक्रियाओं के तहत दिया जाना चाहिए।
- उदाहरण (Example): यदि शासन की नियुक्ति केवल आस्था या कृपा पर आधारित हो, तो यह शासन की निष्पक्षता और न्याय पर प्रश्न उठाता है।
- निगमन (Conclusion): ईश्वरीय कृपा और व्यक्तिगत गुणों के आधार पर शासन सौंपना न्याय दर्शन के अनुसार अधूरा और पक्षपाती है।

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उनके लिए आख़िरत का बदला कहीं बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): ईमान और परहेज़गारी करने वालों को आख़िरत में बेहतर इनाम मिलेगा।
- हेतु (Reason): यह दावा बिना किसी व्यावहारिक प्रमाण के किया गया है और पूरी तरह आस्था पर आधारित है।
- उदाहरण (Example): कर्म और परिणाम का संबंध तात्त्विक और सामाजिक स्तर पर सिद्ध होना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion): केवल आस्था पर आधारित यह तर्क तात्त्विक और प्रमाणिक दृष्टि से कमजोर है।**

आयत 58

आयत का अनुवाद:
"(सूखे की वजह से) यूसुफ के सौतेले भाई अनाज खरीदने मिस्र आए। यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया, लेकिन वे उन्हें न पहचान सके।"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमेय (Object of Knowledge) और उपमान (Comparison)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाईयों को पहचान लिया, लेकिन भाई उन्हें पहचानने में असमर्थ रहे।**
- **हेतु (Reason): पहचानने का यह तर्क केवल यूसुफ के आत्मज्ञान और परिस्थिति पर आधारित है, जो कि सीमित और संयोग हो सकता है।**
- **उदाहरण (Example): अगर भाई इतने वर्षों बाद यूसुफ को पहचानने में असमर्थ रहे, तो इसका तात्त्विक कारण व्यक्तित्व में बदलाव या परिस्थितियों के आधार पर होना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह दावा आस्था और कहानी को आगे बढ़ाने के लिए बनाया गया प्रतीत होता है।**

आयत 59

आयत का अनुवाद:
"जब यूसुफ ने उनके अनाज का सामान ठीक कर दिया और वे जाने लगे, तो यूसुफ ने उनसे कहा: 'अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास लाना। क्या तुमने नहीं देखा कि मैं माप भी पूरा देता हूँ और अच्छा मेहमाननवाज़ भी हूँ?'"

चुना गया न्याय तत्व: **हेतु (Reason) और उपमान (Comparison)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाइयों से उनके सौतेले भाई को लाने का अनुरोध किया।**
- **हेतु (Reason): यहां तर्क के बजाय भावना का सहारा लिया गया है कि यूसुफ अच्छा मेहमाननवाज़ और ईमानदार हैं।**
- **उदाहरण (Example): तर्कसंगत दृष्टि से यह स्पष्ट नहीं होता कि माप पूरा देना और मेहमाननवाज़ी भाई को लाने का कारण कैसे हो सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस अनुरोध का आधार तर्कसंगत नहीं है और इसे भावनात्मक अपील कहा जा सकता है।**

आयत 60

आयत का अनुवाद:
"यदि तुम अपने सौतेले भाई को मेरे पास नहीं लाए, तो तुम्हें मेरे पास से अनाज नहीं मिलेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: **व्याप्ति (Invariable Concomitance) और प्रमाण (Valid Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सौतेले भाई को लाने पर ही अनाज मिलेगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क स्पष्ट नहीं करता कि अनाज वितरण में पारिवारिक परिस्थितियों का क्यों ध्यान रखा गया।**
- **उदाहरण (Example): न्याय संगत रूप से अनाज वितरण का आधार सभी को समान रूप से होना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): पारिवारिक दबाव डालने के लिए अनाज का उपयोग अनुचित और न्याय के विपरीत है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
56	**प्रमाण, व्याप्ति**	**शासन की नियुक्ति आस्था और कृपा पर आधारित है।**
57	**हेतु, प्रमेय**	**आख़िरत का इनाम तात्त्विक और प्रमाणिक दृष्टि से कमजोर है।**

58	**प्रमेय, उपमान**	**भाईयों द्वारा यूसुफ को न पहचानने का दावा संयोग प्रतीत होता है।**
59	**हेतु, उपमान**	**अनुरोध भावनात्मक और तर्कहीन है।**
60	**व्याति, प्रमाण**	**अनाज वितरण में पारिवारिक दबाव डालना अनुचित है।**

निष्कर्ष

आयत 56-60 में कहानी को आगे बढ़ाने के लिए तर्क और आस्था का मिश्रण है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार यह दृष्टिकोण तार्किक दृष्टि से कमजोर और पक्षपाती है। शासन और न्याय प्रणाली में निष्पक्षता और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो यहां अनुपस्थित है।

आयत 61-65 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 61

आयत का अनुवाद:
"भाइयों ने यूसुफ से कहा, 'हम वादा करते हैं कि हम अपने पिता से बिन्यामीन को लाने की अनुमति मांगेंगे, और इस काम को ज़रूर पूरा करेंगे।'"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने वादा किया कि वे अपने पिता से बिन्यामीन को लाने की अनुमति लेंगे।**
- **हेतु (Reason): भाइयों के पिछले कार्य (यूसुफ को कुएं में डालना) उनके वादों की विश्वसनीयता को संदिग्ध बनाता है।**
- **उदाहरण (Example): यदि कोई व्यक्ति पहले ही विश्वासघात कर चुका हो, तो उसी व्यक्ति पर फिर से भरोसा करना तार्किक रूप से कमजोर है।**
- **निगमन (Conclusion): भाइयों के वादे पर भरोसा करने का कोई ठोस तर्कसंगत आधार नहीं है।**

आयत 62

आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने अपने नौकरों को आदेश दिया कि उनकी जमा पूंजी उनके बोरे में रख दो, ताकि जब वे अपने परिवार के पास लौटें, तो इसे पहचान लें और (शायद) वापस लौट आएं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जमा पूंजी को छिपाकर वापस करना भाइयों को पुनः लौटने के लिए प्रेरित करने का एक साधन था।**
- **हेतु (Reason): इस कार्य का आधार नैतिकता और पारदर्शिता की कमी है, क्योंकि यह एक प्रकार का प्रलोभन है।**
- **उदाहरण (Example): यदि किसी को लालच देकर कार्य करवाया जाए, तो यह नैतिक दृष्टिकोण से उचित नहीं माना जाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह कार्य पारदर्शिता और नैतिकता के सिद्धांतों के विपरीत है।**

आयत 63

आयत का अनुवाद:
"भाइयों ने अपने पिता से कहा, 'हमें गल्ला लेने से रोका गया है, इसलिए कृपया बिन्यामीन को हमारे साथ भेज दें। हम उसकी सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी लेंगे।'"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने बिन्यामीन को साथ भेजने की अनुमति मांगी और उसकी सुरक्षा का आश्वासन दिया।**
- **हेतु (Reason): भाइयों की विश्वसनीयता पहले ही कमजोर हो चुकी है। उनका सुरक्षा का दावा यथार्थ से परे प्रतीत होता है।**
- **उदाहरण (Example): यदि किसी व्यक्ति ने पहले धोखा दिया हो, तो उसी व्यक्ति द्वारा दी गई सुरक्षा की गारंटी अविश्वसनीय होगी।**

- **निगमन (Conclusion): भाइयों के तर्क कमजोर और विश्वास के लिए अपर्याप्त हैं।**

आयत 64

आयत का अनुवाद:
"याक़ूब ने कहा, 'मैं तुम्हारे इस वादे पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ, जैसे पहले यूसुफ के मामले में किया था? केवल अल्लाह ही सबसे बेहतर रक्षक है।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब ने भाइयों पर भरोसा करने से इनकार कर दिया और केवल अल्लाह पर भरोसा किया।**
- **हेतु (Reason): यहां तर्क आस्था पर आधारित है, जबकि परिवार की सुरक्षा के लिए व्यावहारिक उपायों का उल्लेख नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): व्यक्तिगत अनुभव से सीखा गया सबक उपयोगी है, लेकिन केवल ईश्वरीय विश्वास पर निर्भर होना व्यावहारिक रूप से अपर्याप्त है।**
- **निगमन (Conclusion): याक़ूब का निर्णय आस्था पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के व्यावहारिक दृष्टिकोण से अधूरा है।**

आयत 65

आयत का अनुवाद:
"जब भाइयों ने अपने सामान खोले, तो उन्होंने देखा कि उनकी पूंजी उन्हें वापस कर दी गई थी। उन्होंने कहा, 'अब्बा, हमें और क्या चाहिए? यह हमारी पूंजी हमें वापस कर दी गई है। हमें बिन्यामीन को भेजने दें। हम अपने परिवार के लिए और अधिक अनाज लाएंगे।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने पूंजी वापस मिलने को एक सकारात्मक संकेत बताया और बिन्यामीन को भेजने की अनुमति मांगी।**
- **हेतु (Reason): पूंजी वापस मिलने को उनकी ईमानदारी या सद्भावना के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया, जो वास्तविकता में तर्कहीन है।**
- **उदाहरण (Example): केवल पूंजी लौटाने से उनकी विश्वसनीयता की पुष्टि नहीं होती, क्योंकि यह यूसुफ की योजना का हिस्सा था।**
- **निगमन (Conclusion): भाइयों का तर्क कमजोर है और परिस्थितियों के तात्त्विक विश्लेषण से मेल नहीं खाता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
61	हेतु, उपमान	भाइयों के वादे पर विश्वास का आधार कमजोर है।
62	प्रमेय, व्याप्ति	पूंजी लौटाना नैतिक और पारदर्शी दृष्टिकोण से अनुचित है।
63	हेतु, उपमान	सुरक्षा की गारंटी अविश्वसनीय है।
64	प्रमाण, हेतु	याक़ूब का निर्णय आस्था पर आधारित है, व्यावहारिक दृष्टिकोण कम है।
65	प्रमेय, व्याप्ति	पूंजी लौटाने को ईमानदारी का प्रमाण मानना तर्कहीन है।

निष्कर्ष

आयत 61-65 में प्रस्तुत घटनाएं तात्त्विक और तार्किक दृष्टिकोण से कई कमजोरियों को उजागर करती हैं। भाइयों की विश्वसनीयता, नैतिकता और पारदर्शिता पर सवाल उठते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, इन घटनाओं को व्यावहारिक और प्रमाणित दृष्टिकोण से विश्लेषित किया जाना चाहिए।

आयत 66-70 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 66

आयत का अनुवाद:
"याक़ूब ने कहा कि जब तक तुम अल्लाह से यह वादा नहीं करोगे कि तुम बिन्यामीन को सुरक्षित वापस लाओगे, मैं उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा। उन्होंने कहा, 'हम जो कह रहे हैं, उसका अल्लाह गवाह है।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब ने भाइयों से बिन्यामीन की सुरक्षा का वादा लिया।**
- **हेतु (Reason): अतीत में भाइयों का व्यवहार यूसुफ के प्रति विश्वासघातपूर्ण था, इसलिए यह वादा व्यावहारिक रूप से संदिग्ध है।**
- **उदाहरण (Example): पहले भी भाइयों ने वादा किया था, लेकिन उसे पूरा नहीं किया।**
- **निगमन (Conclusion): केवल वादे पर विश्वास करना तार्किक रूप से कमजोर है, जब पिछले अनुभव इसका समर्थन नहीं करते।**

आयत 67

आयत का अनुवाद:
"याक़ूब ने कहा, 'सभी एक दरवाजे से प्रवेश मत करना, बल्कि अलग-अलग दरवाजों से प्रवेश करना। लेकिन मैं अल्लाह की इच्छा को नहीं रोक सकता। भरोसा केवल अल्लाह पर है।'"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance) और हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अलग-अलग दरवाजों से प्रवेश करने की सलाह नजर न लगने के डर से दी गई।**
- **हेतु (Reason): "नजर लगने" का विचार तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असमर्थनीय है।**
- **उदाहरण (Example): किसी समूह के एक ही दरवाजे से प्रवेश करने पर नजर लगने का कोई प्रमाणित आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह सलाह अवैज्ञानिक और अंधविश्वास पर आधारित है।**

आयत 68

आयत का अनुवाद:
"जब वे उसी तरह मिस्र में दाखिल हुए जैसा उनके पिता ने उन्हें निर्देश दिया था, तो याक़ूब का यह आदेश अल्लाह की योजना को नहीं बदल सका। लेकिन याक़ूब ने अपने दिल की इच्छा पूरी की।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब का आदेश अल्लाह की योजना को बदल नहीं सकता था।**
- **हेतु (Reason): यदि याक़ूब जानते थे कि उनके आदेश का प्रभाव नहीं होगा, तो यह व्यर्थ था।**
- **उदाहरण (Example): अप्रभावी आदेश देना तार्किक दृष्टिकोण से समय और ऊर्जा की बर्बादी है।**
- **निगमन (Conclusion): आदेश व्यावहारिक दृष्टि से अनुचित और अनावश्यक था।**

आयत 69

आयत का अनुवाद:
"जब वे यूसुफ के पास पहुंचे, तो यूसुफ ने अपने सगे भाई को अपने पास रखा और उससे कहा, 'मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ। जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ है, उसका दुख मत करो।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge) और उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाई को उसकी परेशानियों के लिए सांत्वना दी।**
- **हेतु (Reason): केवल सांत्वना देने से व्यावहारिक समाधान नहीं मिलता।**
- **उदाहरण (Example): जब कोई व्यक्ति कठिनाई में हो, तो केवल सांत्वना पर्याप्त नहीं होती, बल्कि समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावी होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यूसुफ का यह कृत्य सहानुभूति दर्शाता है, लेकिन इसे व्यावहारिक दृष्टिकोण से अधिक प्रभावी बनाया जा सकता था।**

आयत 70

आयत का अनुवाद:
"जब यूसुफ ने भाइयों का सामान व्यवस्थित किया, तो उनके भाई के सामान में पानी का कटोरा रखवा दिया। फिर एक मुनादी ने घोषणा की, 'ऐ काफिला, तुम चोर हो।'"

चुना गया न्याय तत्व: **व्याति (Invariable Concomitance) और हेतु (Reason)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास रखने के लिए एक योजना बनाई।**
- **हेतु (Reason): किसी निर्दोष व्यक्ति को चोरी का आरोप लगाकर पकड़ना न्यायिक और नैतिक दृष्टिकोण से गलत है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, झूठे आरोप लगाने को अनैतिक और अनुचित माना गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह कार्य नैतिकता और न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
66	**प्रमाण, हेतु**	**वादों पर भरोसा अतीत के अनुभवों को नजरअंदाज करता है।**
67	**व्याति, हेतु**	**"नजर लगने" की अवधारणा तर्कसंगत नहीं है।**
68	**प्रमाण, प्रमेय**	**अप्रभावी आदेश समय और ऊर्जा की बर्बादी है।**
69	**प्रमेय, उपमान**	**सांत्वना देना सहायक है, लेकिन व्यावहारिक समाधान नहीं है।**
70	**व्याति, हेतु**	**झूठे आरोप लगाना न्यायिक और नैतिक दृष्टिकोण से गलत है।**

निष्कर्ष

आयत 66-70 में तर्क और न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से कई कमजोरियां दिखाई देती हैं। "नजर लगने" जैसी धारणाएं अवैज्ञानिक हैं, और झूठे आरोपों का उपयोग नैतिकता और न्यायिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। यूसुफ की योजनाएं सहानुभूति दर्शाती हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन नैतिक रूप से विवादास्पद है।

आयत 71-75 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 71

आयत का अनुवाद:
"वे पुकारने वालों के पास गए और पूछा, 'तुम्हारी कौन-सी चीज़ खो गई है?'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने सवाल किया कि कौन-सी चीज़ गायब हुई है।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल तब किया गया जब उन पर चोरी का आरोप लगाया गया।**
- **उदाहरण (Example): बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के चोरी का आरोप लगाना न्यायसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह परिस्थिति पारदर्शिता और प्रमाण की कमी को दर्शाती है।**

आयत 72

आयत का अनुवाद:
"मुलाजिमों ने कहा, 'हम बादशाह का प्याला नहीं पा रहे हैं, और जो इसे वापस लाएगा उसे एक ऊँट के बोझ के बराबर इनाम मिलेगा।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): चोरी हुई वस्तु का नाम और इनाम घोषित किया गया।**
- **हेतु (Reason): बिना ठोस सबूत के चोरी का दावा करना दोषपूर्ण तर्क है।**
- **उदाहरण (Example): अगर किसी वस्तु की चोरी का दावा हो, तो आरोप लगाने से पहले सत्यापन आवश्यक है।**
- **निगमन (Conclusion): यह प्रक्रिया न्यायिक सिद्धांतों के विपरीत है, क्योंकि यह सटीकता और प्रमाण पर आधारित नहीं है।**

आयत 73

आयत का अनुवाद:
"भाइयों ने कहा, 'हम तो इस देश में फसाद फैलाने नहीं आए और हम चोर नहीं हैं।'"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने खुद को निर्दोष बताया।**
- **हेतु (Reason): भाइयों ने अपने चरित्र की सफाई दी, लेकिन पहले के व्यवहार को देखते हुए उनका दावा संदिग्ध हो सकता है।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति की पिछली नैतिकता वर्तमान में दिए गए बयान की वैधता को प्रभावित कर सकती है।**
- **निगमन (Conclusion): भाइयों का दावा केवल वचन पर आधारित है, ठोस प्रमाण नहीं है।**

आयत 74

आयत का अनुवाद:
"मुलाजिमों ने पूछा, 'अगर तुम झूठे हो तो चोर की सज़ा क्या होनी चाहिए?'"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): चोरी साबित होने पर सज़ा की मांग।**
- **हेतु (Reason): बिना जांच के सज़ा का सवाल न्यायिक प्रक्रिया का उल्लंघन है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय दर्शन में भी, सत्यापन और जांच के बिना सज़ा की मांग उचित नहीं मानी जाती।**
- **निगमन (Conclusion): यह न्यायिक सिद्धांतों के विरुद्ध है और निष्पक्षता की कमी दर्शाता है।**

आयत 75

आयत का अनुवाद:
"उन्होंने कहा, 'उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में चोरी का माल निकले, वह व्यक्ति सज़ा स्वरूप गुलाम बने।'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमेय (Object of Knowledge) और हेतु (Reason)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): चोर की सज़ा गुलामी तय की गई।**
- **हेतु (Reason): गुलामी जैसी सज़ा असमानता और मानवाधिकारों का उल्लंघन है।**
- **उदाहरण (Example): किसी अपराध के लिए दंड का स्वरूप उस समाज के न्यायिक और नैतिक मानकों के आधार पर होना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह दंड न्याय और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के विरुद्ध है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
71	**प्रमेय**	**चोरी का आरोप बिना प्रमाण के लगाया गया।**
72	**प्रमाण**	**चोरी का दावा ठोस सबूतों के बिना किया गया।**
73	**उपमान**	**भाइयों का दावा केवल वचन पर आधारित है।**
74	**व्याति**	**जांच के बिना सज़ा की मांग अनुचित है।**
75	**प्रमेय, हेतु**	**सज़ा के रूप में गुलामी अमानवीय है।**

निष्कर्ष

आयत 71-75 में न्याय दर्शन के अनुसार कई त्रुटियां स्पष्ट हैं। चोरी का आरोप और सज़ा बिना प्रमाण और निष्पक्ष प्रक्रिया के तय की गई। गुलामी जैसी सज़ा मानवीय गरिमा के विरुद्ध है। ये आयतें न्याय, मानवाधिकार और तार्किकता के सिद्धांतों के साथ असंगत प्रतीत होती हैं।

आयत 76-80 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 76

आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने अपने भाई के थैले से प्याले को निकाला। यह एक योजना थी जो यूसुफ ने अपने भाई को रोकने के लिए बनाई। अगर खुदा ने ऐसा न चाहा होता, तो वे इसे कानून के अनुसार नहीं कर सकते थे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाई को रोकने के लिए जान-बूझकर यह योजना बनाई।**
- **हेतु (Reason): सत्य और न्याय के मूल सिद्धांतों के विपरीत, इस योजना में धोखा शामिल था।**
- **उदाहरण (Example): किसी भी नैतिक दर्शन में छल-कपट को स्वीकार्य नहीं माना जाता।**
- **निगमन (Conclusion): योजना का आधार नैतिक रूप से दोषपूर्ण है। यह न्याय और सत्य की मूलभूत शिक्षा के खिलाफ है।**

आयत 77

आयत का अनुवाद:
"भाइयों ने कहा, 'अगर उसने चोरी की तो इसमें आश्चर्य नहीं, क्योंकि उसका भाई भी पहले चोरी कर चुका है।'"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने यूसुफ पर भी चोरी का आरोप लगाया।**
- **हेतु (Reason): यह आरोप किसी तथ्य पर आधारित नहीं था, बल्कि पूर्वाग्रह और ईर्ष्या से प्रेरित था।**
- **उदाहरण (Example): किसी के अतीत का संदर्भ देकर उनके वर्तमान कर्मों को गलत ठहराना अनुचित है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आरोप न्यायिक प्रक्रिया और सत्य की खोज को बाधित करता है।**

आयत 78

आयत का अनुवाद:
"भाइयों ने कहा, 'इब्ने यामीन के स्थान पर हम में से किसी एक को ले लीजिए। उसके पिता बहुत वृद्ध हैं।'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमाण (Valid Knowledge) और हेतु (Reason)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): भाइयों ने अपने छोटे भाई की रक्षा के लिए अन्य विकल्प प्रस्तुत किया।**
- **हेतु (Reason): उनके प्रस्ताव में न्याय और सच्चाई का अभाव है। चोर के बदले निर्दोष को सज़ा देना अन्यायपूर्ण है।**
- **उदाहरण (Example): अपराधी को ही सज़ा मिलनी चाहिए, न कि किसी अन्य निर्दोष व्यक्ति को।**
- **निगमन (Conclusion): यह प्रस्ताव न्याय के मूलभूत सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।**

आयत 79

आयत का अनुवाद:
"यूसुफ ने कहा, 'हम किसी निर्दोष व्यक्ति को कैसे सज़ा दे सकते हैं?'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमेय (Object of Knowledge) और व्याप्ति (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने न्याय और सच्चाई के पक्ष में बात की।**
- **हेतु (Reason): हालांकि यूसुफ ने पहले धोखा दिया, लेकिन इस आयत में उन्होंने नैतिकता का पालन किया।**
- **उदाहरण (Example): सत्य को किसी भी परिस्थिति में नहीं छोड़ा जाना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यद्यपि यूसुफ का यह कथन न्यायसंगत है, उनके पिछले कार्य इसके विपरीत हैं।**

आयत 80

आयत का अनुवाद:
"सबसे बड़े भाई ने कहा, 'मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक पिता मुझे अनुमति न दें।'"

चुना गया न्याय तत्व: **प्रमाण (Valid Knowledge) और उपमान (Comparison)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): बड़े भाई ने अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार की।**
- **हेतु (Reason): यह उनके पिछले कार्यों के विपरीत है, जब उन्होंने यूसुफ को छोड़ा था।**
- **उदाहरण (Example): इस प्रकार की अचानक जिम्मेदारी का प्रदर्शन उनकी ईमानदारी पर सवाल उठाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह कथन आत्म-ग्लानि और विवशता का परिणाम है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
76	**हेतु, व्याप्ति**	**योजना में छल-कपट नैतिकता के खिलाफ है।**
77	**उपमान**	**भाइयों का आरोप ईर्ष्या और पूर्वाग्रह से प्रेरित था।**
78	**प्रमाण, हेतु**	**चोर के बदले निर्दोष को सज़ा देना अन्यायपूर्ण है।**
79	**प्रमेय, व्याप्ति**	**यूसुफ का कथन सही है लेकिन पिछले कर्म इसके विपरीत हैं।**
80	**प्रमाण, उपमान**	**बड़े भाई की जिम्मेदारी स्वाभाविक नहीं, बल्कि विवशता है।**

निष्कर्ष

आयत 76-80 न्याय और सत्य के सिद्धांतों के साथ मिश्रित विचारधाराओं को दर्शाती हैं। हालांकि कुछ आयतें नैतिकता का पालन करती हैं, लेकिन यूसुफ द्वारा रची गई योजना और भाइयों के आचरण में स्पष्ट नैतिक विसंगतियाँ हैं। छल और अन्याय को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं माना जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 81

आयत का अनुवाद:
"हम लोग अपने वालिद के पास पलट के जाओ और उनसे जाकर अर्ज़ करो। ऐ अब्बा, आपके साहबज़ादे ने चोरी की और हम लोगों ने तो अपनी समझ के मुताबिक़ (उसके ले आने का एहद किया था) और हम कुछ (अज्र) ग़ैबी (आफत) के निगेहबान थे नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ यूसुफ़ के भाई अपने पिता से यह कहते हैं कि उनके छोटे भाई ने चोरी की और वे इसके बारे में अपने विश्वास पर आधारित हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क अव्यवस्थित है क्योंकि वे अपनी धारणाओं को सत्य मानते हैं, जबकि वास्तविकता का कोई प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे किसी व्यक्ति का यह कहना कि उसने कोई अपराध किया है, बिना इसके प्रमाण के, यह निराधार होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय और प्रमाण के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि किसी भी कथन को केवल विश्वास के आधार पर सत्य मान लेना गलत है।**

आयत 82

आयत का अनुवाद:
"और आप इस बस्ती (मिस्र) के लोगों से जिसमें हम लोग थे दरयाफ़्त कर लीजिए और इस क़ाफले से भी जिसमें आए हैं (पूछ लीजिए) और हम यक़ीनन बिल्कुल सच्चे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ़ के भाई अपने पिता को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि वे सच बोल रहे हैं और इस कथन के समर्थन में अन्य लोगों से पूछताछ करने का प्रस्ताव रखते हैं।**
- **हेतु (Reason): इसका आधार केवल विश्वास और कथन का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास है, लेकिन इसके बिना किसी ठोस प्रमाण का अभाव है।**

- उदाहरण (Example): जैसा कि न्याय दर्शन में कहा गया है कि किसी बयान को प्रमाण के बिना मान्य नहीं माना जा सकता।
- निगमन (Conclusion): यह आयत सच्चाई के केवल कथन और प्रमाण के आधार पर न्याय के सिद्धांत से हटकर है।

आयत 83

आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ जब उन लोगों ने जाकर बयान किया तो याक़ूब ने कहा (उसने चोरी नहीं की) बल्कि ये बात तुमने अपने दिल से गढ़ ली है तो (ख़ैर) सब्र (और ख़ुदा का) शुक्र। ख़ुदा से तो (मुझे) उम्मीद है कि मेरे सब (लड़कों) को मेरे पास पहुँचा दे। बेशक वह बड़ा वाकिफ़ कार हकीम है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason) और प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब यह मानते हैं कि उनके बेटे ने चोरी नहीं की और वह इस पर विश्वास करते हैं कि ख़ुदा उन्हें सही मार्ग पर लाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह विचार केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि उचित तर्क, प्रमाण, और जांच का अभाव है।**
- **उदाहरण (Example): जैसा कि न्याय दर्शन में तर्क और प्रमाण से ही सत्य स्थापित किया जाता है, केवल आस्था और भरोसे से सत्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के आस्था पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 84

आयत का अनुवाद:
"और याक़ूब ने उन लोगों की तरफ से मुँह फेर लिया और (रोकर) कहने लगे हाए अफसोस यूसुफ पर और (इस क़दर रोए कि) उनकी आँखें सदमे से सफेद हो गई वह तो बड़े रंज के ज़ाबित (झेलने वाले) थे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब के लिए यूसुफ़ का शोक अत्यधिक दुख का कारण बन गया था, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हुआ।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में याक़ूब के शोक को केवल भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह कोई तर्कसंगत कारण या वैज्ञानिक आधार नहीं प्रदान करता।**
- **उदाहरण (Example): जैसे एक व्यक्ति मानसिक और शारीरिक पीड़ा से गुजरता है, लेकिन इसे तर्क या कारण से समझाना आवश्यक होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भावनात्मकता पर आधारित है, जो किसी भी तार्किक या वैज्ञानिक कारण से अनुपस्थित है।**

आयत 85

आयत का अनुवाद:
"(ये देखकर उनके बेटे) कहने लगे कि आप तो हमेशा यूसुफ को याद ही करते रहिएगा यहाँ तक कि बीमार हो जाएगा या जान ही दे दीजिएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: **हेतु (Reason)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब के बेटे यह कहते हैं कि वे पिता के लिए यूसुफ का शोक करने के कारण बीमार हो सकते हैं या मर सकते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क इस बात को आधार बनाता है कि एक व्यक्ति का शोक उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर सकता है, जबकि यह विचार वैज्ञानिक और तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे एक व्यक्ति का मानसिक शोक शारीरिक स्थिति पर प्रभाव डाल सकता है, लेकिन इसे केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में देखना उचित नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण की कमी के कारण गलत है। शोक का प्रभाव मानसिक होता है, और इसे शारीरिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
81	हेतु, प्रमेय	किसी घटना का आधार विश्वास और बिना प्रमाण के किया गया बयान गलत है।
82	प्रमाण	सत्य का दावा बिना प्रमाण के किया जाता है, जो तर्कसंगत नहीं है।
83	हेतु, प्रमेय	याक़ूब का विश्वास तर्कसंगत नहीं है, केवल आस्था पर आधारित है।
84	प्रमेय	भावनात्मक शोक तर्कसंगत कारणों से अनुपस्थित है।
85	हेतु	शोक का शारीरिक प्रभाव तर्कसंगत नहीं है।

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और प्रमाण की कमी स्पष्ट है। वे धार्मिक विश्वास, आस्था और भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित हैं, लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, बिना प्रमाण और तर्क के किसी भी बयान को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 86 आयत का अनुवाद:
"याक़ूब ने कहा (मै तुमसे कुछ नहीं कहता) मैं तो अपनी बेक़रारी व रंज की शिकायत ख़ुदा ही से करता हूँ और ख़ुदा की तरफ से जो बातें मै जानता हूँ तुम नहीं जानते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब ने अपनी चिंता और रंज की शिकायत केवल ख़ुदा से की, और जो ज्ञान उन्हें है, वह दूसरों के पास नहीं है।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क न तो वैज्ञानिक है, न ही तार्किक रूप से सही। ज्ञान का आदान-प्रदान तभी संभव होता है जब लोग आपस में संवाद करें और विचार साझा करें, न कि केवल एकतरफा ईश्वर से शिकायत करने पर ही समाधान अपेक्षित हो।**

- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन और विशेष रूप से उपनिषदों में ज्ञान के आदान-प्रदान और संवाद पर बल दिया गया है। केवल एक व्यक्ति की अंतर्निहित भावनाओं का कोई व्यापक उद्देश्य नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत मानवता के बीच संवाद और तर्क की आवश्यकता को नकारती है। यह आयत अज्ञान और संवादहीनता को बढ़ावा देती है, जो सच्चे ज्ञान की ओर मार्गदर्शन नहीं करती।**

आयत 87 आयत का अनुवाद:
"ऐ मेरी फरज़न्द (एक बार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ और उसके भाई को (जिस तरह बने) ढूँढ के ले आओ और ख़ुदा की रहमत से ना उम्मीद न हो क्योंकि ख़ुदा की रहमत से काफिर लोगो के सिवा और कोई ना उम्मीद नहीं हुआ करता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब अपने बेटे से कहते हैं कि वह यूसुफ और उसके भाई को ढूँढने जाएं और ख़ुदा की रहमत से कभी निराश न हों।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार केवल आस्था और विश्वास पर आधारित है, न कि तर्क और वास्तविकता पर। जो लोग काफिर होते हैं, उन्हें रहमत से निराश किया जाता है, जबकि यह दृष्टिकोण अन्यथा भी संभव हो सकता है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि कर्मों का फल सिर्फ आस्था पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के कार्यों पर आधारित होता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में ज्ञान का स्पष्ट अभाव है, और यह मानवता को केवल अंधविश्वास में डालने का प्रयास करती है।**

आयत 88 आयत का अनुवाद:
"फिर जब ये लोग यूसुफ के पास गए तो (बहुत गिड़गिड़ाकर) अर्ज़ की कि ऐ अज़ीज़ हमको और हमारे (सारे) कुनबे को कहत की वजह से बड़ी तकलीफ हो रही है और हम कुछ थोड़ी सी पूंजी लेकर आए हैं तो हम को (उसके ऐवज़ पर पूरा ग़ल्ला दिलवा दीजिए और (क़ीमत ही पर नहीं) हम को (अपना) सदक़ा ख़ैरात दीजिए इसमें तो शक नहीं कि ख़ुदा सदक़ा ख़ैरात देने वालों को जजाए ख़ैर देता है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ के पास लोग गिड़गिड़ाकर यह मांग रहे हैं कि उन्हें ग़ल्ला और सदक़ा दिया जाए, क्योंकि वे बहुत परेशान हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत इस बात को सिखाती है कि निर्धनता के कारण कुछ मांगना उचित है, लेकिन यह संदेश देता है कि केवल खैरात या सदक़ा से ही समस्याएं हल होती हैं, जबकि यह तर्कसंगत समाधान नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): हिंदू दर्शन में, यज्ञ और कर्मफल का सिद्धांत है, जो यह बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मेहनत और प्रयासों के अनुसार परिणाम प्राप्त होते हैं, न कि केवल खैरात से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत समाधान के रूप में कर्म और प्रयास को नकारती है, और केवल खैरात पर निर्भर रहने का संकेत देती है, जो व्यक्तिगत जिम्मेदारी और मेहनत की भावना को कमजोर करती है।**

आयत 89 आयत का अनुवाद:
"(अब तो यूसुफ से न रहा गया) कहा तुम्हें कुछ मालूम है कि जब तुम जाहिल हो रहे थे तो तुम ने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या क्या सुलूक किए।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ अपने भाईयों से कहता है कि वे अतीत में उनके साथ बुरा व्यवहार कर चुके हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यहां यह माना जाता है कि पहले किए गए गलत कामों का परिणाम हमेशा नकारात्मक ही होता है, जबकि जीवन में परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं और सुधार की हमेशा संभावना होती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धांत के आधार पर, व्यक्ति अपने कर्मों को सुधार सकता है और एक नया मार्ग अपना सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत सुधार की संभावना को नकारती है और केवल अतीत के कर्मों के आधार पर वर्तमान को तय करने का पक्ष लेती है।**

आयत 90 आयत का अनुवाद:

"(उस पर वह लोग चैके) और कहने लगे (हाए) क्या तुम ही यूसुफ हो, यूसुफ ने कहा हाँ मै ही यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है बेशक ख़ुदा ने मुझ पर अपना फज़ल व (करम) किया है क्या इसमें शक नहीं कि जो शख़्स (उससे) डरता है (और मुसीबत में) सब्र करे तो ख़ुदा हरगिज़ (ऐसे नेको कारों का) अज्र बरबाद नहीं करता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ का कहना है कि जो व्यक्ति ईश्वर से डरता है और मुसीबतों में सब्र करता है, उसका इनाम कभी नहीं खोता।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार केवल विश्वास पर आधारित है और इसमें वैज्ञानिक या तर्कसंगत कोई स्पष्ट आधार नहीं है। सब्र और डर से किसी के जीवन में सुधार की कोई गारंटी नहीं हो सकती।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कर्मफल सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति को अपने कर्मों का फल निश्चित रूप से प्राप्त होता है, और यह सिर्फ सब्र या डर पर निर्भर नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत निरंतर संघर्ष और परिस्थितियों के आधार पर परिणाम के बजाय केवल विश्वास और डर को महत्व देती है, जो कभी भी सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
86	प्रमाण	संवाद और ज्ञान के आदान-प्रदान का अभाव
87	प्रमेय	अंधविश्वास को बढ़ावा देती है
88	हेतु	केवल खैरात पर निर्भरता गलत संदेश देती है
89	व्याप्ति	सुधार की संभावना को नकारती है
90	प्रमाण	विश्वास और डर के आधार पर निष्कर्ष

निष्कर्ष:
इन आयतों में तर्क और न्याय दर्शन के तत्वों की कमी है। यह अंधविश्वास, एकतरफा विश्वास, और कर्मों की उपेक्षा करने वाली विचारधाराओं को बढ़ावा देती हैं, जो मानवता के लिए अनुपयुक्त हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 91

आयत का अनुवाद: "वह लोग कहने लगे ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ुदा ने यक़ीनन हम पर फज़ीलत दी है और बेशक हम ही यक़ीनन (अज़सरतापा) ख़तावार थे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ, उन लोगों ने अपनी गलती को स्वीकारते हुए माना कि ख़ुदा ने यूसुफ को उनके मुकाबले विशेष फज़ीलत दी।**
- **हेतु (Reasoning): यह मान्यता कि किसी ने ख़ुदा के द्वारा विशेष फज़ीलत प्राप्त की है, बिना किसी तर्कसंगत प्रमाण या कारण के प्रस्तुत की जाती है। इसे केवल विश्वास और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से स्वीकार किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में कर्मों का फल और पुनर्जन्म का सिद्धांत है, जो व्यक्ति के कार्यों और पुण्य के आधार पर होती है, न कि केवल किसी विशेष फज़ीलत के द्वारा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण की अनदेखी करती है, और एक भावना आधारित स्वीकारोक्ति को बढ़ावा देती है, जो तार्किक दृष्टिकोण से विवादास्पद है।**

आयत 92

आयत का अनुवाद: "यूसुफ ने कहा अब आज से तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं ख़ुदा तुम्हारे गुनाह माफ फरमाए वह तो सबसे ज़्यादा रहीम है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने भाइयों को माफ कर दिया और उनके गुनाहों को ख़ुदा से माफ़ी दिलवाने का दावा किया।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ, गुनाहों की माफी के लिए ख़ुदा की रहमानीयत पर आधारित तर्क प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह मानव समझ और न्याय के सिद्धांतों से बाहर है। गुनाह और माफी का निर्धारण केवल धार्मिक विश्वासों पर निर्भर करता है, जबकि यह मानविक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, गुनाहों के लिए सजा या क्षमा का निर्णय कर्म और स्थिति पर निर्भर करता है, न कि केवल ईश्वर की रहमानीयता पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और बिना किसी तर्कसंगत या न्यायिक आधार के माफी के पहलू को प्रस्तुत करती है।**

आयत 93

आयत का अनुवाद: "ये मेरा कुर्ता ले जाओ और उसको अब्बा जान के चेहरे पर डाल देना कि वह फिर बीना हो जाएगें (देखने लगेंगे) और तुम लोग अपने सब लड़के बालों को लेकर मेरे पास चले आओ।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ अपने कुर्ते को अपने पिता याक़ूब के चेहरे पर डालने के लिए भेजते हैं ताकि वह देख सकें।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क सांस्कृतिक या मानसिक विश्वासों पर आधारित हो सकता है, लेकिन वास्तविकता में यह दृष्टिकोण किसी वैज्ञानिक या तार्किक सिद्धांत पर आधारित नहीं है। यह कल्पनाशक्ति और अलौकिक विश्वास को बढ़ावा देता है।**
- **उदाहरण (Example): शास्त्रों में, जब यूसुफ के पिता याक़ूब को उनकी पत्नी राक़ेल की मृत्यु के बाद शोक था, तो उनका दुःख वास्तव में उनके मानसिक स्थिति का परिणाम था, न कि कोई दृश्य तत्व का असर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत रूप से व्याख्यायित नहीं की जा सकती और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 94

आयत का अनुवाद: "और जो ही ये काफ़िला मिस्र से चला था कि उन लोगों के वालिद (याक़ूब) ने कहा दिया था कि अगर मुझे सठिया या हुआ न कहो तो बात कहूँ कि मुझे यूसुफ की बू मालूम हो रही है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब को यूसुफ की पहचान उनके शरीर की गंध से हो गई।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क सुदृढ़ नहीं है। गंध या कोई अन्य मानसिक प्रतीक साक्षात्कार के लिए पर्याप्त नहीं होते। यह एक भ्रामक विश्वास है जो तर्क की हद को पार करता है।**
- **उदाहरण (Example): शास्त्रों में, गंध का प्रभाव मानसिक या शारीरिक स्थिति को प्रभावित करता है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है क्योंकि यह गंध को किसी पहचान का आधार मानने का गलत उदाहरण प्रस्तुत करती है।**

आयत 95

आयत का अनुवाद: "वह लोग कुनबे वाले (पोते वग़ैराह) कहने लगे आप यक़ीनन अपने पुराने ख़याल (मोहब्बत) में (पड़े हुए) हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब के परिवार ने उनका मजाक उड़ाया, क्योंकि उन्हें यूसुफ की गंध का एहसास हो रहा था।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति और अनुभव पर आधारित है, लेकिन यह वास्तविकता से परे है। यह गंध के आधार पर मानसिक स्थिति के पूर्वानुमान को दिखाता है।**
- **उदाहरण (Example): शास्त्रों में मानसिक स्थितियों और धारणा पर आधारित विश्वास का महत्व है, लेकिन यह एक स्थिर और प्रमाणित ज्ञान पर आधारित नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भ्रम और विश्वास को बढ़ावा देती है और तार्किक रूप से समर्थन नहीं करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
91	प्रमाण	विशेष फज़ीलत का दावा तर्कहीन है।
92	प्रमाण	गुनाह माफ़ी का दावा तार्किक और न्यायिक दृष्टिकोण से असंगत है।
93	उपमान	गंध का प्रभाव तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है।
94	प्रमेय	गंध से पहचान की अवधारणा तर्कहीन और अवैज्ञानिक है।
95	प्रमाण	मानसिक स्थिति के आधार पर विश्वास को बढ़ावा देना तर्कहीन है।

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के अभाव में धार्मिक विश्वासों और मानसिक प्रतीकों पर आधारित विचार प्रस्तुत किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों में विश्वसनीयता और तार्किकता की कमी है, और इनका संदेश मानवता के लिए अपर्याप्त और विवादास्पद है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 96

आयत का अनुवाद: "फिर (यूसुफ की) खुशखबरी देने वाला आया और उनके कुर्ते को उनके चेहरे पर डाल दिया तो याक़ूब फौरन फिर दोबारा आँख वाले हो गए (तब याक़ूब ने बेटों से) कहा क्यों मै तुमसे न कहता था जो बातें ख़ुदा की तरफ से मै जानता हूँ तुम नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब को यूसुफ के कुर्ते से उनकी आँखों की रोशनी वापस मिल जाती है।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत तर्कसंगत रूप से समझाई नहीं जा सकती, क्योंकि गंध या वस्त्र के माध्यम से आंखों की रोशनी का लौटना प्राकृतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है। यह कथन धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तर्क और प्रमाण के द्वारा स्पष्ट नहीं होता।**
- **उदाहरण (Example): आधुनिक विज्ञान के अनुसार, आंखों की रोशनी की बहाली किसी भौतिक उपाय से होती है, न कि वस्त्र या गंध के द्वारा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक अलौकिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है जो वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से असंगत है। इसे धार्मिक विश्वासों के रूप में ही देखा जा सकता है।**

आयत 97

आयत का अनुवाद: "उन लोगों ने अज्र की ऐ अब्बा हमारे गुनाहों की मग़फिरत की (ख़ुदा की बारगाह में) हमारे वास्ते दुआ माँगिए हम बेशक अज़सरतापा गुनेहगार हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ के भाई अपने गुनाहों के लिए माफी मांगते हैं और अपने पिता से दुआ की याचना करते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): गुनाहों के लिए माफी का आधार केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित होता है, न कि किसी तार्किक या न्यायिक सिद्धांत पर। यह दृष्टिकोण एक भावनात्मक और विश्वास आधारित कार्रवाई है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वेदांत और न्याय दर्शन में गुनाह और पुण्य का मूल्यांकन कर्म और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित होता है, न कि केवल दुआ या माफी से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत दृष्टिकोण से अस्पष्ट है, क्योंकि यह माफी और दुआ को कर्मों के परिणाम के रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि यह एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 98

आयत का अनुवाद: "याक़ूब ने कहा मै बहुत जल्द अपने परवरदिगार से तुम्हारी मग़फिरत की दुआ करूँगा बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): याक़ूब अपने बेटों के लिए दुआ करेंगे और उनका गुनाह माफ़ होगा।**
- **हेतु (Reasoning): इस कथन में यह दावा किया जाता है कि ख़ुदा से दुआ के माध्यम से माफी मिल सकती है, जो कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और तर्कसंगत रूप से इसका कोई प्रमाण नहीं है। यह एक भावना और विश्वास पर आधारित विश्वास है, जिसे तार्किक दृष्टिकोण से परखा नहीं जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, कर्म और न्याय पर आधारित परिणाम होते हैं, न कि केवल दुआ के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत दृष्टिकोण से ग़लत है, क्योंकि इसमें गुनाहों की माफी के लिए केवल दुआ का आधार प्रस्तुत किया गया है, जो एक असंगत धारणा है।**

आयत 99

आयत का अनुवाद: "ग़रज़ जब फिर ये लोग (मय याक़ूब के) चले और यूसुफ शहर के बाहर लेने आए तो जब ये लोग यूसुफ के पास पहुँचे तो यूसुफ ने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और (उनसे) कहा कि अब इनशा अल्लाह बड़े इत्मिनान से मिस्र में चलिए।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने अपने माता-पिता को मिस्र में रहने के लिए आमंत्रित किया।**
- **हेतु (Reasoning): यह एक सुखद और स्वागत योग्य स्थिति को दर्शाता है, लेकिन यह कोई तर्कसंगत सिद्धांत नहीं प्रस्तुत करता है। यह मानव स्वभाव और रिश्तों पर आधारित एक सामान्य दृश्य है।**

- **उदाहरण (Example):** शास्त्रों में हम पाते हैं कि रिश्तों में सद्भाव और सम्मान होना चाहिए, लेकिन इसके लिए तर्कसंगत सिद्धांतों का पालन नहीं किया जाता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत रिश्तों और सम्मान को दर्शाती है, जो एक मानविक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन यह तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषित नहीं की जा सकती।

आयत 100

आयत का अनुवाद: "पहुँचकर यूसुफ ने अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और सब के सब यूसुफ की ताज़ीम के वास्ते उनके सामने सजदे में गिर पड़े (उस वक़्त) यूसुफ ने कहा ऐ अब्बा ये ताबीर है मेरे उस पहले ख़्वाब की कि मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिखाया बेशक उसने मेरे साथ एहसान किया जब उसने मुझे क़ैद ख़ाने से निकाला और बावजूद कि मुझ में और मेरे भाईयों में शैतान ने फसाद डाल दिया था उसके बाद भी आप लोगों को गाँव से (शहर में) ले आया (और मुझसे मिला दिया) बेशक मेरा परवरदिगार जो कुछ करता है उसकी तद्बीर खूब जानता है बेशक वह बड़ा वाकिफकार हकीम है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यूसुफ अपने माता-पिता के सामने तख्त पर बैठकर सम्मान प्राप्त करते हैं, और यह उनके पुराने सपने का सच होना दिखाया जाता है।
- **हेतु (Reasoning):** यह कथन धर्म और भविष्यवाणी पर आधारित है, लेकिन इसे वास्तविकता के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह एक भावनात्मक और अलौकिक दृष्टिकोण है जो तर्क से परे है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना का परिणाम उसके कारणों पर आधारित होता है, न कि केवल भविष्यवाणी या धार्मिक दृष्टिकोण पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भावनाओं और भविष्यवाणियों के आधार पर अधिक केंद्रित है, न कि किसी तर्कसंगत या वैज्ञानिक सिद्धांत पर।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	तत्व (Nyaya	मुख्य आलोचना

संख्या	Element)	
96	प्रमाण	आँखों की रोशनी का वापस आना तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत है।
97	प्रमाण	गुनाहों की माफी के लिए दुआ का आधार तर्कसंगत नहीं है।
98	प्रमाण	गुनाह माफी के लिए दुआ का दावा तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत है।
99	उपमान	रिश्तों में सम्मान को तर्कसंगत रूप से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता।
100	प्रमेय	भविष्यवाणी और अलौकिक दृष्टिकोण तर्कसंगत सिद्धांतों से परे हैं।

निष्कर्ष

इन आयतों में ज्यादातर तर्कसंगत दृष्टिकोण से असंगत विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो धार्मिक विश्वासों और भावनाओं पर आधारित हैं, न कि वैज्ञानिक या न्यायिक सिद्धांतों पर। न्याय दर्शन के अनुसार, इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन यह दिखाता है कि इनका संदेश मानवता के लिए अपर्याप्त और प्रमाणित नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 101

आयत का अनुवाद: "उसके बाद यूसुफ ने दुआ की, 'ऐ परवरदिगार! तूने मुझे मुल्क भी अता फरमाया और मुझे ख्वाब की बातों की ताबीर भी सिखाई, ऐ आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही मेरा मालिक सरपरस्त है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, तू मुझे (दुनिया से) मुसलमान उठाये और मुझे नेककारों में शामिल फरमा।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यूसुफ ने दुआ में अल्लाह से अपनी नेकता और धार्मिकता को बनाए रखने की प्रार्थना की।
- **हेतु (Reasoning):** यूसुफ की दुआ का यह विचार बिना किसी प्रमाण के केवल ईश्वर पर निर्भर करता है। तर्क और वास्तविकता का कोई ठोस आधार नहीं है कि यह दुआ सचमुच यथार्थ है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू दर्शन में कर्म और परिणाम की सीधी कड़ी होती है, अर्थात इंसान को अपने कर्मों का फल प्राप्त होता है, न कि केवल दुआ से उसकी नैतिक स्थिति सुधरती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्राकृतिक और तार्किक प्रक्रियाओं के बजाय केवल धार्मिक आस्थाओं को बढ़ावा देती है, जो मानवता के लिए अव्यावहारिक है।

आयत 102

आयत का अनुवाद: "ऐ रसूल, ये किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारे पास वही के ज़रिए भेजते हैं, और तुम्हें मालूम होता है वरना जिस वक़्त यूसुफ के भाई बाहम अपने काम का मशवरा कर रहे थे और (हलाक की) तदबीरे कर रहे थे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह बताती है कि यह किस्सा ग़ैब (अज्ञेय) की जानकारी है, जो केवल अल्लाह के संदेश के माध्यम से प्राप्त की गई है।
- **हेतु (Reasoning):** "ग़ैब" की जानकारी का स्रोत केवल धार्मिक आस्था है, बिना किसी प्रमाण या विश्लेषण के। यह एक बिना आधार वाला दावा है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू दर्शन में, अज्ञेय या भविष्य की जानकारी को प्रमाणित किया जा सकता है यदि वह किसी वस्तु की तात्त्विकता से मेल खाती हो, जैसे कि शास्त्रों में दी गई भविष्यवाणियाँ जो प्रमाणित हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण के एक अमान्य दावा प्रस्तुत करती है जो तर्क और प्रमाण के विपरीत है।

आयत 103

आयत का अनुवाद: "तुम उनके पास मौजूद न थे और कितने ही चाहो मगर बहुतेरे लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि बहुत से लोग ईमान नहीं लाएंगे, चाहे जितना भी प्रयास किया जाए।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार पूर्वनियति के सिद्धांत को बढ़ावा देता है, जिसका कहना है कि कुछ लोग पहले से ही ईमान नहीं लाएंगे, भले ही कोई कितना भी प्रयास करें।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और निर्णय का महत्व है। ईमान लाने का निर्णय एक स्वतंत्र क्रिया होनी चाहिए, न कि पहले से निर्धारित।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्यक्तियों की स्वतंत्र इच्छा और तर्कसंगत विचार के विपरीत है, जो मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 104

आयत का अनुवाद: "हालांकि तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत का) कोई सिला नहीं माँगते और ये (क़ुरान) तो सारे जहाँन के वास्ते नसीहत (ही नसीहत) है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि कुरान एक सार्वभौमिक संदेश है और यह सभी के लिए नसीहत है।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ यह दावा किया गया है कि कुरान हर इंसान के लिए है, लेकिन यह सिर्फ एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे सभी मानवता पर लागू नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू दर्शन में वेद और शास्त्र व्यापक रूप से सार्वभौमिक हैं, लेकिन कोई भी शास्त्र सिर्फ एक समुदाय के लिए नहीं होता; यह सभी मानवता के लिए होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी एक विशेष समुदाय की बात करती है और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।**

आयत 105

आयत का अनुवाद: "और आसमानों और ज़मीन में (ख़ुदा की कुदरत की) कितनी निशनियाँ हैं जिन पर ये लोग (दिन रात) ग़ुज़ारा करते हैं और उससे मुँह फेरे रहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत यह कहती है कि आसमान और ज़मीन में परमेश्वर की कुदरत की निशानियाँ हैं, लेकिन लोग इनसे मुँह मोड़ते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इन "निशानियों" का कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): हिंदू दर्शन में, ब्रह्मा की कृति को देखकर हम उनसे सीखते हैं, लेकिन यह तर्क, प्रमाण और आत्मनिर्भरता पर आधारित होता है, न कि केवल विश्वास पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क के विपरीत है और एक विश्वास पर आधारित है, जो मानवता के लिए उचित नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
101	प्रमेय	तर्कसंगत आधार का अभाव
102	प्रमाण	बिना प्रमाण के दावा
103	व्याप्ति	पूर्वनियति का सिद्धांत
104	प्रमाण	धार्मिक दृष्टिकोण का दावान
105	प्रमाण	वैज्ञानिक आधार का अभाव

निष्कर्ष

इन आयतों में स्पष्ट रूप से तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है। इन आयतों में तर्कसंगत तरीके से घटनाओं की व्याख्या करने के बजाय अंधविश्वास और विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया गया है। इन विचारों का मानवता के लिए सार्वभौमिक और तार्किक रूप से स्वीकार्य होना मुश्किल है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 101

आयत का अनुवाद: "उसके बाद यूसुफ ने दुआ की, 'ऐ परवरदिगार! तूने मुझे मुल्क भी अता फरमाया और मुझे ख्वाब की बातों की ताबीर भी सिखाई, ऐ आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही मेरा मालिक सरपरस्त है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, तू मुझे (दुनिया से) मुसलमान उठाये और मुझे नेककारों में शामिल फरमा।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यूसुफ ने दुआ में अल्लाह से अपनी नेकता और धार्मिकता को बनाए रखने की प्रार्थना की।**
- **हेतु (Reasoning): यूसुफ की दुआ का यह विचार बिना किसी प्रमाण के केवल ईश्वर पर निर्भर करता है। तर्क और वास्तविकता का कोई ठोस आधार नहीं है कि यह दुआ सचमुच यथार्थ है।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू दर्शन में कर्म और परिणाम की सीधी कड़ी होती है, अर्थात इंसान को अपने कर्मों का फल प्राप्त होता है, न कि केवल दुआ से उसकी नैतिक स्थिति सुधरती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्राकृतिक और तार्किक प्रक्रियाओं के बजाय केवल धार्मिक आस्थाओं को बढ़ावा देती है, जो मानवता के लिए अव्यावहारिक है।**

आयत 102

आयत का अनुवाद: "ऐ रसूल, ये किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारे पास वही के ज़रिए भेजते हैं, और तुम्हें मालूम होता है वरना जिस वक़्त यूसुफ के भाई बाहम अपने काम का मशवरा कर रहे थे और (हलाक की) तदबीरे कर रहे थे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि यह किस्सा ग़ैब (अज्ञेय) की जानकारी है, जो केवल अल्लाह के संदेश के माध्यम से प्राप्त की गई है।**
- **हेतु (Reasoning): "ग़ैब" की जानकारी का स्रोत केवल धार्मिक आस्था है, बिना किसी प्रमाण या विश्लेषण के। यह एक बिना आधार वाला दावा है।**

- **उदाहरण (Example):** हिन्दू दर्शन में, अज्ञेय या भविष्य की जानकारी को प्रमाणित किया जा सकता है यदि वह किसी वस्तु की तात्त्विकता से मेल खाती हो, जैसे कि शास्त्रों में दी गई भविष्यवाणियाँ जो प्रमाणित हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण के एक अमान्य दावा प्रस्तुत करती है जो तर्क और प्रमाण के विपरीत है।

आयत 103

आयत का अनुवाद: "तुम उनके पास मौजूद न थे और कितने ही चाहो मगर बहुतेरे लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि बहुत से लोग ईमान नहीं लाएंगे, चाहे जितना भी प्रयास किया जाए।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार पूर्वनियति के सिद्धांत को बढ़ावा देता है, जिसका कहना है कि कुछ लोग पहले से ही ईमान नहीं लाएंगे, भले ही कोई कितना भी प्रयास करें।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और निर्णय का महत्व है। ईमान लाने का निर्णय एक स्वतंत्र क्रिया होनी चाहिए, न कि पहले से निर्धारित।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्यक्तियों की स्वतंत्र इच्छा और तर्कसंगत विचार के विपरीत है, जो मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं है।

आयत 104

आयत का अनुवाद: "हालांकि तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत का) कोई सिला नहीं माँगते और ये (क़ुरान) तो सारे जहाँन के वास्ते नसीहत (ही नसीहत) है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह कहती है कि क़ुरान एक सार्वभौमिक संदेश है और यह सभी के लिए नसीहत है।

- **हेतु (Reasoning): यहाँ यह दावा किया गया है कि कुरान हर इंसान के लिए है, लेकिन यह सिर्फ एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे सभी मानवता पर लागू नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): हिन्दू दर्शन में वेद और शास्त्र व्यापक रूप से सार्वभौमिक हैं, लेकिन कोई भी शास्त्र सिर्फ एक समुदाय के लिए नहीं होता; यह सभी मानवता के लिए होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी एक विशेष समुदाय की बात करती है और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।**

आयत 105

आयत का अनुवाद: "और आसमानों और ज़मीन में (ख़ुदा की कुदरत की) कितनी निशनियाँ हैं जिन पर ये लोग (दिन रात) ग़ुज़ारा करते हैं और उससे मुँह फेरे रहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत यह कहती है कि आसमान और ज़मीन में परमेश्वर की कुदरत की निशानियाँ हैं, लेकिन लोग इनसे मुँह मोड़ते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इन "निशानियों" का कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): हिंदू दर्शन में, ब्रह्मा की कृति को देखकर हम उनसे सीखते हैं, लेकिन यह तर्क, प्रमाण और आत्मनिर्भरता पर आधारित होता है, न कि केवल विश्वास पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क के विपरीत है और एक विश्वास पर आधारित है, जो मानवता के लिए उचित नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
101	**प्रमेय**	**तर्कसंगत आधार का अभाव**
102	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के दावा**

103	**व्याप्ति**	**पूर्वनियति का सिद्धांत**
104	**प्रमाण**	**धार्मिक दृष्टिकोण का दावान**
105	**प्रमाण**	**वैज्ञानिक आधार का अभाव**

निष्कर्ष

इन आयतों में स्पष्ट रूप से तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है। इन आयतों में तर्कसंगत तरीके से घटनाओं की व्याख्या करने के बजाय अंधविश्वास और विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया गया है। इन विचारों का मानवता के लिए सार्वभौमिक और तार्किक रूप से स्वीकार्य होना मुश्किल है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 106

आयत का अनुवाद: "और अक्सर लोगों की ये हालत है कि वह ख़ुदा पर इमान तो नहीं लाते मगर शिर्क किए जाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि लोग ख़ुदा पर विश्वास नहीं करते लेकिन शिर्क (अलौकिक शक्ति के साथ साझेदारी) करते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह एक धारणा प्रस्तुत की जा रही है, लेकिन इस पर कोई ठोस प्रमाण या वैज्ञानिक आधार नहीं है कि शिर्क वास्तव में व्यावहारिक रूप से वास्तविक है।**
- **उदाहरण (Example): हिंदू दर्शन में, देवताओं की पूजा एक व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था और कार्य का परिणाम होती है, न कि किसी तरह की साझेदारी का संकेत।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण के शिर्क को एक सामान्य मान्यता के रूप में प्रस्तुत करती है, जो मानवता के लिए तार्किक रूप से अप्रासंगिक है।**

आयत 107

आयत का अनुवाद: "तो क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हो बैठे हैं कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब आ पड़े जो उन पर छा जाए या उन पर अचानक क़यामत ही आ जाए और उनको कुछ ख़बर भी न हो?"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह सवाल करती है कि क्या लोग इस बात से शांति अनुभव करते हैं कि ख़ुदा का अज़ाब या क़यामत उन पर अचानक आ सकता है।
- हेतु (Reasoning): यह आयत यह मान रही है कि अचानक अज़ाब या क़यामत आना हमेशा सत्य है, जो बिना किसी प्राकृतिक या वैज्ञानिक आधार के अप्रत्याशित रूप से घोषित किया गया है।
- उदाहरण (Example): हिन्दू दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत है, जो स्पष्ट रूप से यह बताता है कि हर घटना का एक कारण और परिणाम होता है, न कि अचानक कोई आस्था आधारित अज़ाब।
- निगमन (Conclusion): यह आयत अज्ञेय घटनाओं पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क के खिलाफ हैं।

आयत 108

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) उन से कह दो कि मेरा तरीका तो ये है कि मैं (लोगों) को ख़ुदा की तरफ बुलाता हूँ, मैं और मेरा पैरव (पीछे चलने वाले) (दोनों) मज़बूत दलील पर हैं और ख़ुदा (हर ऐब व नुक़्स से) पाक व पाकीज़ा है और मैं मुशरेकीन से नहीं हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि पैग़म्बर और उनके अनुयायी मज़बूत दलील पर हैं, और वे शिर्क (अलौकिक साझेदारी) से दूर हैं।
- हेतु (Reasoning): दलील के मज़बूती का कोई स्पष्ट प्रमाण या तार्किक आधार नहीं दिया गया है। यह दावा सिर्फ एक धार्मिक स्थिति को व्यक्त करता है।
- उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में, शास्त्रों और तर्क के आधार पर किसी भी विचार की पुष्टि की जाती है, न कि केवल विश्वास पर आधारित।
- निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के सिर्फ एक धार्मिक विश्वास को बढ़ावा देती है, जो तार्किक दृष्टिकोण से अपर्याप्त है।

आयत 109

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी हम गाँव ही के रहने वाले कुछ मर्दों को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा किए हैं कि हम उन पर वही नाज़िल करते थे, तो क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि ग़ौर करते कि जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम क्या हुआ और जिन लोगों ने परहेज़गारी एख़्तेयार की उनके लिए आख़िरत का घर (दुनिया से) यक़ीनन कहीं ज्यादा बेहतर है, क्या ये लोग नहीं समझते?"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जो लोग परहेज़गारी अपनाते हैं, उनके लिए आख़िरत का घर (स्वर्ग) बेहतर है।
- **हेतु (Reasoning):** यह दावा धर्म और विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या ठोस तार्किक आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू दर्शन में, कर्म और परिणाम की स्पष्ट अवधारणा है, जो सत्य और न्याय के सिद्धांतों से मेल खाती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी प्रमाण के एक विश्वास आधारित स्थिति प्रस्तुत करती है, जो तार्किक दृष्टिकोण से असंगत है।

आयत 110

आयत का अनुवाद: "पहले के पैग़म्बरों ने तबलीग़े रिसालत यहाँ वक़्त की, जब (क़ौम के इमान लाने से) पैग़म्बर मायूस हो गए और उन लोगों ने समझ लिया कि वह झुठलाए गए, तो उनके पास हमारी (ख़ास) मदद आ पहुँची। तो जिसे हमने चाहा नजात दी, और हमारा अज़ाब गुनेहगार लोगों के सर से तो टाला नहीं जाता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए, तो भगवान की मदद आई और दोषियों से अज़ाब हटा लिया गया।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार इस पर आधारित है कि केवल भगवान की मदद से ही सही मार्ग पर लाया जा सकता है, जबकि यह सिद्धांत तर्कसंगत और प्रमाणिक नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** हिन्दू दर्शन में, जीवन के सत्य को ज्ञान, कर्म, और अनुभव के आधार पर जाना जाता है, न कि केवल दिव्य हस्तक्षेप से।

- **निगमन (Conclusion): यह आयत जीवन की घटनाओं को अलौकिक हस्तक्षेप से जोड़ने का प्रयास करती है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
106	**प्रमाण**	**शिर्क का दावा बिना प्रमाण के है।**
107	**व्याप्ति**	**अज़ाब और क़यामत के बारे में अप्रत्याशित दावा।**
108	**प्रमाण**	**दलील की मज़बूती का कोई प्रमाण नहीं।**
109	**प्रमाण**	**धार्मिक विश्वास का कोई ठोस आधार नहीं।**
110	**प्रमाण**	**केवल अलौकिक हस्तक्षेप पर विश्वास।**

निष्कर्ष

इन आयतों में कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है। ये आयतें केवल विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, बिना किसी वैज्ञानिक या तार्किक आधार के। इन विचारों का मानवता के लिए तार्किक रूप से स्वीकार्य होना मुश्किल है।

आयत का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 111

आयत का अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि उन लोगों के किस्सों में अक़्लमन्दों के वास्ते (अच्छी ख़ासी) इबरत (व नसीहत) है, ये (कुरान) कोई ऐसी बात नहीं है जो (ख्वाहामा ख्वाह) गढ़ ली जाए बल्कि (जो आसमानी किताबें) इसके पहले से मौजूद हैं उनकी तसदीक़ है और हर चीज़ की तफसील और इमानदारों के वास्ते (अज़सरतापा) हिदायत व रहमत है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह दावा करती है कि कुरान में पहले की किताबों की पुष्टि की गई है और यह समझने के लिए इबरत और नसीहत का स्रोत है।
- **हेतु (Reasoning):** यह दावा किया गया है कि कुरान एक ऐसा सत्य है जो पहले की आसमानी किताबों की पुष्टि करता है और इसमें हर चीज़ का विस्तार है। लेकिन इस पर कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह किताबें वास्तव में सत्य हैं और ये पूर्व की किताबों की तसदीक़ करती हैं।
- **उदाहरण (Example):** हिंदू दर्शन में, वेदों और उपनिषदों में दी गई जानकारी को अनुभव और तर्क के माध्यम से सत्यापित किया जाता है, न कि केवल धार्मिक आस्थाओं के आधार पर। इसी प्रकार, कुरान को भी किसी वैज्ञानिक या तार्किक तरीके से प्रमाणित किया जाना चाहिए, न कि सिर्फ विश्वास पर आधारित।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस प्रमाण या तार्किक आधार नहीं दिया गया है। जबकि हर चीज़ की तफसील और हिदायत के लिए प्रमाण की आवश्यकता है, और इसे प्रमाणित किया जाना चाहिए।

आलोचना के बिंदु:

1. **शक की अनुपस्थिति:** आयत में कहा गया है कि इसमें शक नहीं है, लेकिन किसी धार्मिक या ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रमाण के बिना कोई भी दावा सत्य नहीं हो सकता।
2. **पहले की किताबों का संदर्भ:** यह दावा किया गया है कि कुरान पहले की किताबों को सत्यापित करता है, लेकिन इसे भी बिना किसी पुख्ता प्रमाण के स्वीकार करना समस्या पैदा करता है।
3. **तफसील और हिदायत:** हर चीज़ की तफसील और हिदायत देने का दावा किया गया है, लेकिन यह एक विश्वास पर आधारित विचार है और इसे तर्कसंगत तरीके से साबित करने की आवश्यकता है।

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
111	प्रमाण	कुरान के सत्य होने का कोई ठोस वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं।

निष्कर्ष

यह आयत विश्वास पर आधारित है, जिसमें पहले की किताबों की तसदीक़ और कुरान की हिदायत का दावा किया गया है। हालांकि, इसका कोई प्रमाण या ठोस तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है जो इसे तार्किक रूप से स्वीकार्य बनाए। इसलिए, यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर निर्भर है, न कि किसी प्रमाणित ज्ञान पर।